ज्ञानामृत
मार्च, 1989 वर्ष 24 ❋ अंक 9 मूल्य 1.75

१

२

१ माउण्ट आबू–'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' का उद्घाटन दृश्य। (बाएं से) डा० जेमस जोना, सहायक महासचिव, यू०एन०ओ०, ब्र० कु० जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश बी०सी० राय जी, ब्र० कु० हृदय मोहिनी, दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका,भ्राता कृष्णा अय्यर, पूर्व न्यायाधीश, ब्र० कु० निर्वैर जी तथा लार्ड एनल्ज मोमबत्तियां जलाते हुए।

२ माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में उपस्थित जनसभा को सम्बोधित करते हुए भारत के सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय मामलों के मंत्री भ्राता एच० एल०के० भगत जी। मंच पर उपस्थित हैं (बाएं से) ब्र० कु० बृजमोहन, ब्र० कु० ओमप्रकाश, डा० इरीक जेन्सन, निदेशक, यू०एन० सूचना केन्द्र, यू०के०, दादी प्रकाशमणि जी, दादी चन्द्रमणि जी।

माउण्ट आबू — से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि०।

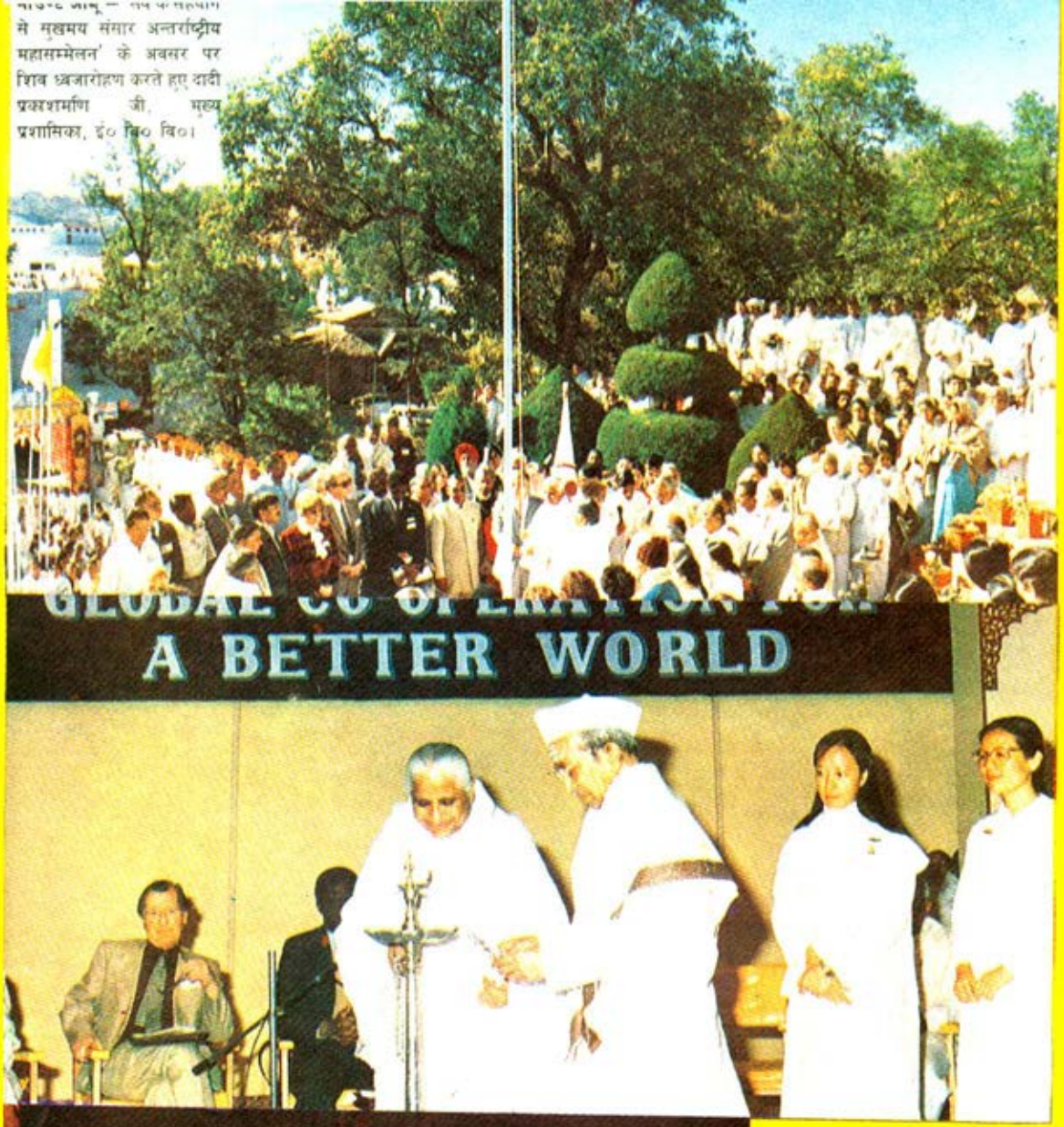

माउण्ट आबू में आयोजित शिखर सम्मेलन का उद्घाटन मोमबत्ती जलाकर करते हुए महामहिम बी०डी० जत्ती, पूर्व उपराष्ट्रपति, भारत तथा दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका, ई० वि०वि०।

भोपाल सेवाकेन्द्र पर प्रसिद्ध गायक भ्राता महेन्द्र कपूर जी पधारे। वे दादी प्रकाशमणि जी, ब्र० कु० महेन्द्र जी तथा अन्य के साथ खड़े हैं।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना की अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श समिति के सदस्य तथा योजना की राष्ट्रीय परामर्श समितियों के अध्यक्ष शिखर सम्मेलन में भाग लेते हुए।

माउण्ट आबू में आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में उपस्थित ६० देशों के प्रतिनिधिगण कार्यक्रम को रुचिपूर्वक देखते हुए।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के अवसर पर शिक्षाप्रद नाटक प्रस्तुत करते हुए विदेशी भाई-बहन।

Regd No
10563/65-D (E)-70

माउण्ट आबू में आयोजित शिखर सम्मेलन में मंच पर उपस्थित हैं दादी प्रकाशमणि जी, भ्राता कृष्णा अय्यर, पूर्व न्यायाधीश, लार्ड एन्नल तथा अन्य।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में भ्राता रामानन्द सागर जी सपरिवार पधारे। वे दादी जी के साथ एक ग्रुप फोटो में।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के अवसर पर प्रस्तुत किये गए प्रेरणादायक नाटक 'आत्मदर्शन' का एक दृश्य।

अमृत-सूची

१. शिव परमात्मा को बधाई पत्र १
२. समझौता या एक-तरफा फैसला (सम्पादकीय) २
३. आपसी दुर्भावनाओं को मिटाकर प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा दें ५
४. सुखमय संसार का आधार आध्यात्मिकता एवं विश्व सहयोग ६
५. विश्व को आध्यत्मिकता एवं शान्ति के द्वारा ही सुखमय बनाया जा सकता है ७
६. बेहतर विश्व के लिये युवावर्ग का दृष्टिकोण ९
७. लेखनी की रचनात्मक शक्ति १०
८. सुखमय संसार बनाने में समाज सेवकों का योगदान ११
९. सुखमय संसार का दिग्दर्शन १२
१०. सकारात्मक रास्ता रचनात्मक कार्यों के लिये १३
११. सुखमय संसार के निर्माण में संचार साधनों का योगदान १४
१२. बेहतर दुनिया के लिये राजनैतिक सिद्धान्त १६
१३. सहयोग की भावना का विकास १७
१४. विश्व परिवर्तन का आधार सहयोग १८
१५. आबू घोषणा पत्र २०
१६. इलाहबाद में 'महाकुम्भ' के अवसर पर 'जीवन दर्शन मेला' सम्पन्न २२
१७. जीवन पहले ही छोटा है इसे तनाव से और छोटा न करो २३
१८. विकर्मों की होलिका जलाकर होली बनो २७
१९. महाशिवरात्रि – 'शिव' का अवतरणोत्सव २८
२०. सहयोग दो, सहयोग लो २९
२१. सुखमय संसार की एक झलक २९
२२. 'शरीर' और 'आत्मा' दोनों को सम्पन्न बनाने वाली शिक्षा की रूपरेखा ३०
२३. आओ जीवन रूपी पौधे को दिव्य गुणों रूपी फूलों से सम्पन्न बनायें ३२
२४. आओ, खेलें होली शिव-साजन के संग ३२

६ मार्च १९८९–५३ वीं शिवरात्रि पर

शिव परमात्मा को बधाई पत्र

परमप्रिय परमपिता शिव परमात्मा,

इस स्वर्णिम संगमयुग की सुमधुर घड़ियों को जब बुद्धि रूपी नयनों के सामने लाता हूँ तब हृदय हर्षोल्लास से नाच उठता है। मानव जीवन की धन्यता का, प्रसन्नता का बेजोड़ अनुभव होता है। परमात्मा जैसी हस्ती को, सत्ता को हम कितनी दूर, असाध्य समझते थे, लेकिन असंभव भी संभव बन जाता है। सामान्य मानव को लाखों की लॉटरी लगने से जो आनंद मिलता है, इससे अनेक गुणा आनंद इस युग में आपके दिव्य अवतरण से हम बच्चों को मिल रहा है!

हे परमशिक्षक परमात्मा! आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का यथार्थ परिचय देकर आपने तो हमें नया जीवन दिया! मरजीवा जन्म की उत्तमोत्तम सौगात दी। काँटे फूल बनें, दानव देव बनें, पतझड़ बहार में परिवर्तित हो जाए और कोकिल के सुमधुर स्वर सारे वातावरण को आनन्द, उल्लास से भर दें–ऐसी अनुभूति हम कर रहे हैं।

लौकिक जीवन की मर्यादाएँ और दिव्य अलौकिक जीवन की विशेषताएँ, खूबियाँ ज्ञान के माध्यम से प्राप्त हंस-वृत्ति से अब स्पष्ट हो गई हैं। जीवन का चित्र स्पष्ट बन गया है। जीवन का ध्येय, मंजिल, साध्य, स्पष्ट है। पुरुषार्थ की राह पर चलते-चलते नये-नये अनुभवों की खान भरती जाती है जो आत्माओं को समृद्ध बनाती है। हद के दिलों में आज सागर की विशालता, गहनता और ज्ञान-सरिता के कल्याणकारी स्रोत का अनुभव हो रहा है। जीवन साफल्य का परितोष वर्तमान एवं भावी जीवन के लिए नई रोशनी, नई चमक लाया है।

हे प्रेम के सागर शिव पिता! इस सृष्टि का कोई भी पिता दे न सके इतनी उच्च, महान् दिव्य, देह और आत्मा दोनों को तृप्त, धन्य करने वाली शिक्षा जो आपने दी। हे सुख के सागर शिव पिता! आपका प्रेम भटकन की थकान को, त्रिविध तापों को हरकर शीतलता प्रदान करता है। इस कलियुगी सृष्टि का धनी से धनी पिता भी दे न सके ऐसा भव्य, २१ जन्मों का वर्सा-मुक्ति, जीवन-मुक्ति देकर आपने बच्चों के लिए खजानों के सर्व भंडार खोल दिये हैं। जहाँ कोई भेद नहीं, दीवार नहीं, खजानों को ताला भी नहीं। जातिभेद, धर्मभेद, भाषाभेद, वर्गभेद, राष्ट्रभेद की संकुचित दीवारों को तोड़कर आपने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना साकार की है। इससे आज विश्व का अंतर कम हो गया है।

माउन्ट आबू स्थित मधुबन तपोभूमि, वरदान भूमि में देश-विदेशों के अनेक बच्चे कितनी महान् बिचारधारा को अपनाकर प्रेम, एकता, त्याग, तपस्या और सेवा में व्यस्त हैं,

(शेष ४ पृष्ठ पर)

समझौता या एक-तरफ़ा फ़ैसला

काफी समय से अमेरिका और रूस में अस्त्र-शस्त्र-निर्माण के क्षेत्र में दौड़ और होड़ चली आ रही थी। वे एक-दूसरे से बढ़कर अधिक शक्तिशाली और अधिक संख्या में आणविक तथा अन्य शस्त्र बनाने के कार्य पर अरबों डालर हर वर्ष खर्च कर देते थे और अपने देश के उच्च स्तर के हज़ारों-लाखों वैज्ञानिकों को ऐसे ही प्रकार के नये-नये अस्त्रास्त्र ईजाद करने में तथा वहां के लाखों युवकों को सैनिक कार्यों में लगाये हुए थे। उन्हें यह बात भी समझ में नहीं आती थी कि इस तरह के युद्ध में दोनों पक्षों में से कोई भी नहीं जीतेगा क्योंकि दोनों में से कोई बचेगा ही नहीं और कि उनके अपने-अपने गुट के अतिरिक्त विश्व का भी महाविनाश हो जायेगा। **दोनों पक्ष समझौते के लिये कभी-कभी मिलते भी थे, दोनों में बात-चीत भी होती थी परन्तु एक-दूसरे के बारे में संदेह होने के कारण तथा दोनों ओर भय, घृणा तथा असुरक्षा का भाव होने के कारण उनमें समझौता हो ही नहीं पाता था।** अमेरिका के प्रधान रोनल्ड रीगन ने एक बार यहां तक भी कह दिया था कि रूस "बुराई ही का साम्राज्य" (Evil Empire) है और कई बर्ष पहले एक बार ख्रुश्चोव, जब वह रूस के साम्यवाद दल के महासचिव थे, ने यह काहा था कि "मैं चाहता हूँ कि आप लोग (अर्थात् अमरीका और उसका गुट) ज़मीन में दब जाओ" (I want to see you buried)। इस प्रकार की शत्रुता और घृणा में भला समझौता हो ही कैसे सकता था?

परन्तु जब गोरबचेव रूस की राजनीतिक महासभा (Politbureau) के महासचिव बने तो उन्होंने सकारात्मक विचार प्रणाली (Positive thinking) से अपने कुछ विचार रखे। जब वे दिहली आये थे तो उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के साथ मिलकर यह साँझी घोषणा की थी कि वे "आणविक अस्त्रों से रहित और अहिंसा की नीति वाला विश्व (Nuclear-Weapon-free non-violient world) चाहते हैं। परन्तु संदेह के वातावरण के कारण उनकी इस महत्त्वपूर्ण घोषणा पर दूसरे देशों ने विशेष ध्यान ही नहीं दिया। फिर जब प्रधान रीगन रूस गये, तब भी रूस द्वारा समझौते की बात पर कुछ चर्चा तो हुई परन्तु अविश्वास के वातावरण के कारण समझौता तब भी नहीं हुआ। परन्तु रीगन के रूस जाने, नेताओं तथा लोगों से मिलने, आवभगत होने और सम्मान-सहित बातचीत (Communication) होने से रुख बदला। वहां कुछ मित्रता का वातावरण देखकर अमेरिका के प्रधान रेगन, के मन में भी परिवर्तन आया और उसको लगा कि रूस के नेताओं और लोगों के मन में कुछ परिवर्तन आया है। अतः उसके बाद गोरबचेव जब अमेरिका गये तो विशेष प्रकार के मिसाइल्स (Missiles) अथवा प्रक्षेप्यास्त्रों को तोड़ देने के लिये दोनों देशों में समझौता हो गया। उसके बाद कुछ मिसाइलों को तोड़ना प्रारम्भ भी किया गया। उन्हीं में एक-मिसाइल का एक टुकड़ा ११ फ़रवरी को माउंट आबु में हुए सम्मेलन के प्रारम्भ में रूस की शान्ति समिति (Peace Committee) के उपप्रधान ने ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी को भेंट किया और उसका समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में छपा।

इससे कुछ समय पहले जब रूस के प्रधान गोर्बाचेव, संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में भाग लेने गये तब उन्होंने वहां यह भी घोषणा की थी कि अब हम अस्त्र-शस्त्र तथा फौजें कम करने के बारे में अमेरिका से समझौता किये बिना ही एक-तरफ़ा (Unilateral) यह घोषणा करते हैं कि हम योरूप से 5 लाख फौजें कम कर देंगे, और दस हज़ार टैंक हटा देगें और उनके इस एक-तरफा फैसले से संसार में राजनीतिक वातावरण में तनाव कुछ और कम हुआ है तथा विचार-प्रणाली में कुछ और भी अन्तर पड़ा है।

हम यह तो नहीं कहते कि अब विश्व-युद्ध नहीं होगा या सभी अस्त्र-शस्त्र तोड़ दिये जायेंगे क्योंकि वह तो बहुत दूर की बात है और अभी तो संसार के महाविनाश लिये पर्याप्त अस्त्रों से भी कई गुणा अस्त्रों का भण्डार दोनों गुटों के पास है। परन्तु हम यह कहना चाहते हैं कि **सकारात्मक सोचते रहने से और समझौता करने की सच्ची नीयत होने से ही दोनों में घृणा तथा अविश्वास आदि कम होते हैं और वातावरण में तनाव कम होकर मित्रता बढ़ती है।** यह तथ्य इस ऐतिहासिक वृत्तान्त से स्पष्ट है।

व्यक्तिगत जीवन में और आध्यात्मिक पुरुषार्थ में एक तरफ़ा फैसला

इस बात को सामने रखते हुए हमें चाहिये कि यदि हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी किसी से संघर्ष हो तो हम सकारात्मक ही सोचते रहें और सच्चे मन से दूसरे पक्ष को समझौते का सुझाव देते ही रहें ताकि जीवन में तनाव कम हो और मुटाव तथा वैरभाव न बढ़े। **परन्तु यदि दूसरा पक्ष समझौते के लिये तैयार नहीं भी होता और ईर्ष्या-द्वेष, घृणा, भेद-भाव में डटा ही रहता है तो फिर हमें चाहिये कि हम इस विषय में एक-तरफ़ा (Unilateral) फैसला कर लें कि हम तो मन-मुटाव, लड़ाई या अनबन नहीं करेंगे, दूसरा पक्ष यदि ऐसा करना चाहता है तो वह उसकी इच्छा, उसका स्वभाव-संस्कार, व्यवहार तथा कर्म है।** हम

यह सोच लें कि हम उससे चटाबेटी, संघर्ष या खींचातानी नहीं करेंगे बल्कि हम शान्त, गम्भीर, न्याय-युक्त, सद्-व्यवहार-युक्त और सुमधुरतापूर्वक होकर रहेंगे। इस प्रकार की नीति-रीति ही ज्ञानवान और योगियों के व्यक्तिगत जीवन की पद्धति-प्रणाली होनी चाहिये। हम किसी दूसरे व्यक्ति या पक्ष के अनुचर (Follower) तो नहीं हैं कि जैसा वह करता है, उसे देख कर हम भी वैसा ही करें। हमें तो दूसरों के आगें आदर्श स्थापित करना है, न कि दूसरों को आर्दश भंग करते देख कर हमें भी रचनात्मक (Creative) की बजाय विध्वंसात्मक बंनना है। संसार में पहले ही से तनाव, घृणा, द्वेष ईर्ष्या इत्यादि बहुत है और यदि हम भी उसमें वृद्धि करते हैं तो हमारे जीवन को धिक्कार है और ज्ञान तथा योग को सीखना ही निष्प्रयोजन है। पूर्व जन्मों के ही विकर्म दग्ध नहीं हुए और अब हम नया खाता विकर्मों का और खोल ले - यह तो मूर्खता ही है। दूसरा व्यक्ति यदि हमें दल-दल में फँसने का निमंत्रण दे या उसके लिये उकसाहट दे और हम भी अपनी आँखों पर पट्टी बांध कर उसके कहने पर लगकर दल-दल की ओर चल पड़ें तब यह तो हमारी ही विवेक-शून्यता है। यदि हम दूसरे को दल-दल से निकाल नहीं सकते तो कम-से-कम स्वयं तो उसमें न फँसें।

इस प्रकार का एक-तरफ़ा फैसला करने में कई बार ऐसा महसूस होगा कि दूसरा व्यक्ति सोचेगा कि हमने हार मान ली है। कई परिचित व्यक्ति भी हमें कहेंगे कि "तुम डरते क्यों हो, यह तो तुम्हारी कमज़ोरी है"? वे उक्साहट दिलाते हुए कहेंगे कि "तुम्हारी जगह पर हम होते, तब हम तो इसे सीधा करते", अथवा कि यदि तुमने उस व्यक्ति का सामना नहीं किया तब तो वह और भी अधिक अन्यायी और आंतकवादी बन जायेगा"। हमें यह याद रखना चाहिये कि इस प्रकार के ग़लत व्यवहार से हम भी भगवान् के पास दोषी ठहराये जायेंगे और अपने कर्मों की सज़ा पायेंगे। दूसरों की बुरी रीति-नीति को देखने और उससे प्रभावित होने के लिये हम भी ईश्वराज्ञा को भंग करने वालों की सूची में अपना नाम पायेंगे। दूसरे के दुर्व्यवहार को प्रायः दुर्व्यवहार से सदा के लिये ठीक नहीं किया जा सकता। इतिहास में ऐसे किसी वृत्तांत का उदाहरण नहीं है जिससे यह स्पष्ट हो कि बुरा करने से सम्पूर्ण और स्थाई अच्छाई स्थापन हुई। दूसरों को अपने जीवन की अच्छाई से तथा उनके कार्य में बुराई को स्पष्ट करने से ही बुराई का निराकरण किया जा सकता है।

अतः पिछली बातों को छोड़कर इस शिवरात्रि ही से सही, अब यदि किसी का भी हमसे मन मुटाव है तो हमें उसे स्नेह पूर्वक कहना चाहिये कि हमारी कोई भूल-चूक हो तो हमें क्षमाकर दो और आगे के लिये हमारी कमी हमें बता दो ताकि हम और भी महान बनें और अब सद्भावना, शुभ कामना पूर्वक चलें और मिलकर संसार में शान्ति स्थापित करें। प्रेमपूर्वक ऐसा सुझाव देने पर भी यदि कोई हमारी नीयत में संदेह करता है तो फिर हम एक-तरफ़ा ही फैसला कर लें कि हमारी तरफ़ से रास्ता साफ़ है; हम न किसी कुचक्र में फँसेंगे न दल-दल में धसेंगे। यह दूसरी बात किसी को कहने की नहीं है, यह तो अपने ही मन का फ़ैसला होना चाहिये। —जगदीश

नई दिल्ली (हरिनगर): भ्राता आर० ए० रस्तोगी संयुक्त समाचार सम्पादक 'हिन्दुस्तान' तथा उनकी पत्नी आध्यात्मिक संग्रहालय के चित्रों की व्याख्या सुनने के पश्चात् ब्र० कु० शुक्ला, ब्र० कु० सुन्दर लाल जी, कमलेश तथा प्रकाश बहिन के साथ ग्रुप फोटो में।

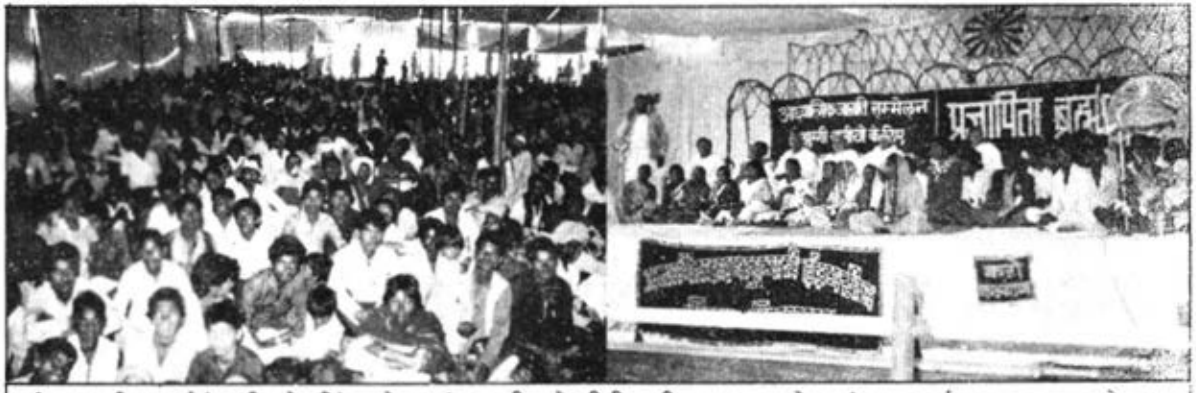

भोपाल: दलित वर्ग (झुग्गी झोपड़ी) सम्मेलन में झुग्गी-झोपड़ी निवासी, ब्र० कु० महेन्द्र मंच पर माईक पर प्रवचन करते हुए।

(पृष्ठ १ का शेष)
मग्न हैं। अज्ञानी आत्माओं के लिए कलियुग है पर ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर आपने हमें संगमयुग रूपी पारसमणि की पहचान दी। हमें धन्य-धन्य बना दिया है!

लौकिक अलौकिक जीवन में संतुलन रखने के लिए, अनेक प्रकार के विघ्नों का सामना करने के लिए, साधना में परिपूर्णता लाने के लिए, देवत्त्व को साकार करने के लिए आप अमृतवेले हम बच्चों को—आत्माओं को विशेष लाईट-माईट प्रदान करते हो। कभी लड़खड़ाते पैर को ठीक करते हो। अशुद्ध वृत्तियों के संग्राम में लड़ने के लिए ज्ञान के विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों से सजाते हो। प्रतिपल हम बच्चों की कितनी पालना करते हो। एक भी दिन की छुट्टी लिए बिना लगातार हमें प्रेम, तन्मयता से ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हो। 'थ्री इन वन' (एक में ही तीन) की तरह हे शिवबाबा! आप एक में ही हम परमपिता, परम शिक्षक, परमसद्गुरु की अनुभूति करके आप से हम प्रेम पढ़ाई, पालना और पथप्रदर्शन पा रहे हैं। इससे भी बढ़कर 'आल इन वन (All in One एक ही में सब) के समान आप में ही हम सर्व सम्बन्धों का अलौकिक रस अनुभव करते हैं।

पिता! माया के अनेक रूपों से आप हमें सावधान रखते हो! हम बच्चों के प्रति आपका कितना प्यार, कितनी ममता है! हमें अपनी छत्रछाया में रखकर बेफिकर बादशाह बना देते हो! आत्मा ऐसी अनुभूति कर रही है। पिता! परमपिता! मीठा शिवबाबा!—इन शब्दों में कितना जादू, कितनी चुम्बकीय शक्ति है जो आत्माओं को विश्व के कोने-कोने से खींचकर आप शमा पर, परवाना बनाकर स्वाहा कराती है। पिता! आपके अनगिनत गुणों का वर्णन करने के लिए मेरा हृदय बहुत उत्सुक है पर मेरे मनोभावों को हृदय में समाकर यहाँ ही रुक जाता हूँ।

६ मार्च १९८९, शिवरात्रि—आपके ५२वें जन्मोत्सव पर हम ब्रह्मा-वत्सों की लाख-लाख बधाई स्वीकार हो। अन्त में मेरी यही शुभ इच्छा है कि इस ५२वीं हीरे तुल्य जयन्ती पर विश्व की सर्व आत्माओं को आपके अवतरण का सन्देश देकर उन्हें आपसे मिलने वाले मुक्ति-जीवन मुक्ति के वर्से का अधिकारी बनाऊँ।

आपका लाडला,
सिकिलधा बच्चा
ब्र०कु० प्रोफेसर कालिदास,
अहमदाबाद

● ● ● ●

हुबली—'पिता श्री' ब्रह्मा बाबा के २०वें स्मृति-दिवस पर आयोजित समारोह का उद्घाटन दृश्य।

बड़ौदा—'पिता श्री' प्रजापिता ब्रह्मा के २०वें स्मृति-दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का एक दृश्य।

पाटन—सेवाकेन्द्र द्वारा भगिनी समाज, पाटन के सहयोग से आयोजित 'महिला उत्थान प्रदर्शनी' का उद्घाटन दृश्य।

आपसी दुर्भावनाओं को मिटाकर प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा दें

[redacted] दादी प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका, ई० वि० वि०

माउण्ट आबू, ९ फरवरी १९८९

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के अन्तर्गत आयोजित 'शिखर सम्मेलन' का कार्यक्रम युनिवर्सल पीस हाल में विधिवत सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति माननीय बी० डी० जत्ती ने किया। इस अवसर पर सभी महाद्वीपों तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के अनेक प्रतिनिधियों के अतिरिक्त देश-विदेश से आये हुए २००० प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

श्री जत्ती ने कहा कि शिखर वार्ता का आरम्भ एक ऐसे अनुकूल समय पर हुआ है, जबकि विश्व की दो महाशक्तियाँ परस्पर निकट आ रही हैं और हथियारों की होड़ कम करने तथा मानव अधिकार और पर्यावरण संरक्षण पर विश्व-भर में चेतना जागृत हुई है। समता, शांति और सद्भावपूर्ण संसार की स्थापना के लिए जनसामान्य से सहयोग का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हम सभी सहयोग हेतु मिलकर कार्य करें तो विश्वयुद्ध के स्थान पर विश्व शांति कायम हो सकेगी।

मानवीय उद्यम की सभी शाखाओं, विज्ञान, शिक्षा और विभिन्न व्यवसायों के सामूहिक उद्यम पर बल देते हुए श्री जत्ती ने कहा कि हम सबको संकीर्ण लक्ष्यों पर आधारित भेदभाव भुलाकर शांतिपूर्ण संसार के निर्माण में अपना हाथ बढ़ाना चाहिए जिससे गरीबी, भुखमरी, कुपोषण और आर्थिक शोषण के उन्मूलन में सहायता मिलेगी। उन्होंने आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने का सुझाव देते हुए कहा कि ध्यानयोग के माध्यम से मानव आत्मसंयम और परस्पर सद्भाव से रह सकता है।

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि धर्म, राजनीति और विज्ञान की शक्तियों के आपसी सहयोग से ही सुखमय संसार की स्थापना सम्भव होगी। दादी जी ने विश्व-भर में मानवमात्र से जोरदार अपील की कि आपसी दुर्भावनाओं को मिटाकर परस्पर प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा दें।

इस योजना के सह-अध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्रसंघ के सहायक महासचिव डा० जेम्स जोना ने इस अभियान की प्रशंसा करते हुए कहा कि यद्यपि कुछ देशों में इसका क्रियान्वयन कठिन है पर इसमें पूरी सफलता की आशा है और विश्व की सुरक्षा के लिए सबका सहयोग नितांत आवश्यक है।

अन्त में इस योजना के अन्तर्गत अभी तक किये गये कार्यों की संक्षिप्त रिपोर्ट सभी देशों के प्रतिनिधियों ने सुनाई जो बहुत ही उत्साहवर्धक थी। इंग्लैण्ड के हाऊस ऑफ लार्डस के सदस्य तथा इस योजना के सह अध्यक्ष लार्ड एनल्स ने योजना के प्रथम चरण की उपलब्धियों से अवगत कराया।

नॉर्थ अमेरिका की सलाहकार समिति के चेयरमेन मिस्टर केनन लॉयड ने नार्थ अमेरिका के बारे में, सोवियत पीस कमेटी के उपाध्यक्ष भ्राता अलेक्जेण्डर फलॉयर कोवस्की ने यूरोप के बारे में, आस्ट्रेलिया की सलाहकार समिति के मिस्टर डेविड शरबोने ने आस्ट्रेलिया के बारे में, अफ्रीका के बारे में केन्या की सलाहाकार समिति के अध्यक्ष मिस्टर किंगस्ले ने तथा एशिया के बारे में मलेशिया की सलाहकार समिति की अध्यक्षा बहन पी० जी० लीम एवं चीन के बारे में वहाँ के डॉयरेक्टर ऑफ इन्टरनेशनल डिपार्टमेन्ट फण्ड फार पीस हेण्डीकेप्ड ने तथा संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने उपस्थित जनसमूह को प्रेरणादायक शब्दों में बताया कि योजना में सभी का सहयोग मिल रहा है।

इस चर्चा में भाग लेने हेतु ४० देशों के ८० अति-विशिष्ट व्यक्ति तथा लगभग २००० प्रतिनिधि पधारे। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देश और सहयोग से चलाई जा रही इस योजना से विश्व की स्थिति को बेहतर बनाने हेतु अत्याधिक अवसर उपलब्ध होंगे।

माउण्ट आबू में आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के उद्घाटन समारोह में स्वागत-गीत प्रस्तुत करते हुए बहन मीनू पुरुषोतम।

सुखमय संसार का आधार – 'आध्यात्मिकता एवं विश्व सहयोग'

माउण्ट आबू, १० फरवरी १९८९

पुरातन काल से ऋषि-मुनियों की तपस्यास्थली आबू-पर्वत के सुसज्जित ओमशांति भवन के विशाल सभागार में अत्यंत भव्य एवं मनोरम परिवेश में बम्बई की प्रसिद्ध गायिका बहन मीनू पुरुषोत्तम के स्वागत गीत के साथ सायंकाल 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के 'स्वागत समारोह' का शुभारम्भ हुआ।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयोजित इस सम्मेलन में विश्वभर के ४० देशों से पधारे हुए ८० विशिष्ट व्यक्तियों तथा लगभग २००० प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करते हुए भोपाल में आध्यात्मिक संग्रहालय के निदेशक ब्रह्माकुमार महेन्द्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आबू की पावन भूमि में विश्वभर के इतने महान् व्यक्तियों के समागम से यह आशा साकार होती लगती है कि मानव मूल्यों के अवमूल्यन से पतनोन्मुखी संसार को शीघ्र ही शांतिपूर्ण, प्रेम, अहिंसा और सद्गुणों से सम्पन्न सुखमय संसार में बदला जा सकेगा।

लोकप्रसिद्ध टी० वी० सीरियल 'रामायण' के निर्माता एवं निर्देशक भ्राता रामानंद सागर ने अपने उद्बोधन में विश्वविद्यालय के आध्यात्मिक परिवेश की महानता प्रकट करते हुए कहा कि यहाँ के हरेक भाई-बहन उर्ध्वगामी अवतारी भाव पुरुष हैं जो सारे विश्व की आत्माओं का हाथ पकड़ कर उन्हें आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जा रहे हैं। आबू तीर्थ की इन विभूतियों के महान् प्रयास से 'विश्व सहयोग' के पुण्य कार्य का प्रारूप पूरा हो चुका है, सिर्फ उसे स्थूल रूप देना बाकी है जो हम सबके सहयोग से अवश्य ही शीघ्र ही पूरा हो सकेगा।

संसद सदस्य भ्राता जयप्रकाश अग्रवाल ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आध्यात्मिक शक्ति का सही दिशाबोध कराने वाला इतना बड़ा स्थान मैंने पहली बार देखा है जो विभिन्न धर्मभेदों के बहकावे से दूर ले जानेवाला, संसार को शांति और परस्पर सहयोग की ओर प्रेरित करनेवाला अपने ढंग का पहला अनुष्ठान है। आबू के इस सम्मेलन से संसार को सही मार्ग मिल सकेगा।

इस योजना की नॉर्थ अमेरिका की सलाहकार समिति के अध्यक्ष भ्राता केनन लॉयड कैजन ने कहा कि एक शक्तिशाली अलौकिक चुम्बकीय-शक्ति ने मुझे आकर्षित करके इस महासम्मेलन में बुला लिया। हम सभी मिलकर संसार में प्रेम, न्याय, शक्ति और सद्भाव से पूर्ण एक विश्व व्यवस्था की स्थापना में अपना पूर्ण सहयोग देंगे, जिसकी यह जीर्ण होता जा रहा विश्व आशा लगाये है। ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय की संयुक्त प्रशासिका ब्रह्माकुमारी निर्मल शान्ता जी ने कहा कि आज सारे संसार की पुकार है— शान्ति जो हम सभी के परस्पर सहयोग से ही पूरी हो सकेगी। ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय की सभी आत्मायें अपने आप में ऐसी ही दैवी दुनिया का उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं और सारा संसार उनका अनुकरण करेगा।

मंच संचालन राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शशि बहन ने किया। ब्रह्माकुमारी शीलू बहन ने राजयोग का अभ्यास कराया जिससे २००० से भी अधिक व्यक्तियों को गहन शांति का अनुभव हुआ।

आउण्ट आबू–अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के उद्घाटनअवसर पर प्रस्तुत किये गए आदिवासी लोकनृत्य का एक दृश्य।

विश्व को आध्यात्मिकता एवं शान्ति के द्वारा ही सुखमय बनाया जा सकता है

जेम्स जोना, सहायक महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ

माउण्ट आबू, ११ फरवरी १९८९

महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति माननीय बी० सी० राय ने कहा कि "मानवता, सजन्नता और समता से ही सुखमय संसार बनेगा। हरेक से प्रेम किया जाये, सबका सहयोग लिया जाये, सद्व्यवहार किया जाये तो सुखमय संसार बनेगा।

योजना की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि सुखमय संसार बनाने के लिये सभी का सहयोग आवश्यक है और हम सभी मानव सृष्टि के आदि पिता ब्रह्मा की भुजायें हैं। जैसे हाथ की पाँचों उंगलियों के मिलकर कार्य करने से हर कार्य में सफलता मिलती है, इसी प्रकार संसार को दुःखी बनाने वाले काम, क्रोध, मोह आदि पाँच विकारों को त्यागने से यह संसार सुखी बनेगा। उन्होंने आगे कहा कि हम चार बातें सदा याद रखें कि (१) हम एक पिता के बच्चे हैं, (२) शांतिदूत हैं, (३) एकता के सूत्र में हैं और (४) मैं खुश हूँ तो दूसरे खुश हैं। स्वआत्मा में स्थित हो, स्व को जानने से सभी श्रेष्ठ कर्म करेंगे और यह दुनिया सुन्दर बन जायेगी।

योजना के सह-अध्यक्ष एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव डॉ० जेम्स जोना ने विश्वभर में की गयी सेवाओं की सफलता पर अपने अनुभवयुक्त विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'विश्व सुखमय बने'—यही सबकी आन्तरिक इच्छा है क्योंकि विश्व विनाश से तभी बच सकता है जब इसे अच्छा बनाने के कार्य में सबका सहयोग मिले। उन्होंने कहा कि विश्व को आध्यात्मिकता एवं शांति के द्वारा ही सुखमय बनाया जा सकता है। यही माऊण्ट आबू का संदेश है जो धीरे-धीरे सारे विश्व में फैल रहा है।

योजना के दूसरे सह-अध्यक्ष एवं हाऊस ऑफ लार्डस के सदस्य लार्ड एनल्स ने आबू में हुए शिखर सम्मेलन के निर्णयों को घोषित करते हुए कहा कि "हमें नकारात्मक विचारों को समाप्त कर विश्व में सुखशांति लाने एवं सबका सहयोग लेने हेतु पहले स्वयं को नैतिक एवं चारित्रिक रूप से सुधारना होगा तब ही आदर्श रूप से विश्व में नैतिक मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि विश्व में व्यक्तियों के कर्म, सिद्धान्त एवं क्रियाकलाप भिन्न हो सकते हैं लेकिन शांति, प्रेम एवं सहयोग की भावना हरेक के अन्दर है। उसी का सहयोग लेकर सुखमय संसार बनाया जा सकता है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी हृदय मोहिनी जी ने अपने दिव्य प्रेरणादायक सन्देश में कहा कि अगर हम सभी एकजुट होकर दृढ़ निश्चय से हिम्मत रखकर कार्य करते हैं तो सर्वशक्तिवान परमात्मा की मदद से कठिन कार्य भी सहज हो जाता है। निश्चय, हिम्मत एवं उमंग-उत्साह को किसी भी परिस्थिति में कम नहीं होने देना है। सदैव उमंग-उत्साह के पंख लगाकर ऊपर बढ़ते जाना है। इस निश्चय से विश्व अवश्य परिवर्तित होगा।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश माननीय कृष्णा अय्यर जी ने कहा कि आज का विश्व हथियारों की दौड़ से भयभीत है लेकिन उसे निर्भय बनाने एवं सुखमय बनाने का सन्देश माउण्ट आबू से ही मिलना है। न्यायाधीश अय्यर जी ने कहा कि मैं विश्व के अनेक देशों में गया हूँ, रूस में भी गया हूँ। सब जगह यही अनुभव किया कि भौतिकवाद से लोग परेशान हैं, आध्यात्म की ओर झुक रहे हैं। करुणा और समता की भावना से

माउण्ट आबू 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के उद्घाटन समारोह में दादी प्रकाशमणि जी से विचार-विमर्श करते हुए उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश बी०सी० राय जी।

सुखमय संसार बनेगा। जब तक असमानता है तब तक सुख-शांति नहीं हो सकती है।

योजना के महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने योजना को सफलता पूर्वक चलाने में अथक सहयोग करने के लिए सभी का स्वागत किया।

योजना की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी के सलाहकार एवं संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने सम्मेलन की रूपरेखा पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान महाविनाश के वातावरण में प्रत्येक मनुष्य सुखमय संसार की कामना करता है। यह मनुष्य मात्र की इच्छा ही ईश्वरीय इच्छा है। इस परियोजना द्वारा प्रत्येक को स्वयं को बदलने, विश्व को बदलने की प्रेरणा मिली है।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में अपने विचार व्यक्त करते हुए मौरिशियस के उप प्रधानमंत्री।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में पधारे गुजरात उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश गोकुल कृष्णन जी तथा न्यायाधीश मजूमदार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी।

६० देशों में यह योजना चली है, आगे सारे विश्व में यह अवश्य फैलेगी। उन्होंने सभी उपस्थित प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत किया।

इससे पूर्व ओमशांति भवन के प्रांगण में विश्व भर से आये प्रतिनिधियों का अनूठे तरीके से गीत, संगीत तथा लोकनृत्य के द्वारा स्वागत हुआ। सम्मेलन की सफलता का प्रतीक सुखमय संसार का चारों दिशाओं में सन्देश फैलाने हेतु कबूतर एवं गुब्बारे आकाश में उड़ाये गये। आकाश में मंडराते कबूतर एवं गुब्बारों के कारण अनूठा दृश्य दिख रहा था। दादी प्रकाशमणि जी ने शिव ध्वज का आरोहरण किया। इस अवसर पर बम्बई की प्रसिद्ध गायिका मीनू पुरुषोत्तम ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ■

माउण्ट आबू – अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर शिक्षाविदों के लिये आयोजित कार्यशाला का एक दृश्य।

कार्यशाला

बेहतर विश्व के लिए युवावर्ग का दृष्टिकोण

माउण्ट आबू–अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित युवकों को सम्बोधित करते हुए भ्राता जी० रंगाराव, निदेशक, भारत स्काउट एवं गाईडस, दिल्ली।

माउण्ट आबू, ११ फरवरी, १९८९

सुखमय संसार के लिए सबका सहयोग' योजना पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित युवावर्ग की कार्यशाला में चर्चा करते हुए देश-विदेशों के विद्वानों एवं वक्ताओं ने युवावर्ग की रचनात्मक शक्ति को व्यवस्थित कार्यों में लगाये जाने और बेहतर विश्व के लिए युवावर्ग का दृष्टिकोण पर अपने विचार प्रस्तुत किए ।

परिचर्चा के मुख्य प्रवक्ता डा० आत्मजीत सिंह, निदेशक, पंजाब विश्वविद्यालय ने जवानी की तूफानी विध्वंसकारी शक्ति को नियन्त्रित करके उपयुक्त रचनात्मक कार्यों में लगाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया । ट्रिनीडाड के युवा, खेलकूद व सांस्कृतिक मंत्रालय के संसदीय सचिव भ्राता कीनेथा बुचर ने युवावर्ग की समस्याओं का उल्लेख करते हुए बताया कि 'विश्व युवा संघ ' की रिपोर्ट के अनुसार 8 करोड़ युवक अब भी निरक्षर हैं और गरीबी की सीमा रेखा के नीचे हैं । अतः मानव संसाधन विकास को उनमें आत्मबल और योग्यता वृद्धि के लिए उपाय करने होंगे ।

भारत स्काउट्स और गाइड्स, नई दिल्ली के निदेशक डा० जी० रंगाराव ने कहा कि आज के युवा कल के नेता हैं, अतः उन्हें स्वस्थ, सुखी एवं देशभक्त नागरिक बनाने के लिए उनकी शक्तियों को संगदोष में पड़कर भोग-विलास तथा कामोपभोग से बचाना होगा । इसके लिए उनमें आत्म-संयम द्वारा चारित्रिक विकास का बढ़ावा देना होगा । और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का 'राजयोग' इसका उपयुक्त माध्यम है ।

हांगकांग के दैनिक समाचार पत्र 'इंडियन' के सम्पादक भ्राता नंद गिडवानी ने गाँधी, ईसा मसीह और कार्ल मार्क्स का उल्लेख करते हुए कहा कि युवापन में राष्ट्र-भक्ति, त्याग, सहयोग, ग्रामीण पुनरूत्थान की प्रबल उत्कंठा के विकास हेतु 'योग' बहुत आवश्यक है । अमेरिका के राजयोग प्रशिक्षक ब्रह्माकुमार साइमन, सिडनी की ब्रह्माकुमारी मीरा, जयपुर की ब्रह्माकुमारी पूनम ने युवावर्ग में राजयोग के अभ्यास से होने वाले मानसिक, नैतिक और आत्मिक उत्थान की प्रक्रिया को विस्तार से स्पष्ट किया ।

अन्त में राजस्थान जोन प्रभारी ब्रह्माकुमारी दादी रत्नमोहिनी ने दिशाहीनता, निराशा, नशेबाजी, कामनाओं से अतृप्ति, बेकारी आदि समस्याओं से युवावर्ग को उबारकर उनमें आत्मबल, एकाग्रता, पवित्रता, दिव्यगुण-सम्पन्नता के विकास के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के अभ्यास का आह्वान किया । उन्होंने कहा कि युवावर्ग में क्रान्तिकारी परिवर्तन शक्ति होती है । उन्हीं के द्वारा विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति लाई जा सकेगी ।

कार्यशाला

लेखनी की रचनात्मक शक्ति

माउण्ट आबू, ११ फरवरी १९८९

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी रूक्मणि, अतिरिक्त जोन इन्चार्ज, नई दिल्ली ने बताया कि कला और साहित्य से मनुष्य के जीवन के साथ देश का भी निर्माण होता है। चित्र, संगीत, नाटक इत्यादि द्वारा शुभ विचारों, अच्छी भावनाओं का एवं उज्ज्वल चरित्रों का दर्शन कराया जाए तो सुखमय संसार के निर्माण में कलाकार, साहित्यकार आदि का सहयोग मूल्यवान बन सकता है। उन्होंने आगे कहा कि देह अभिमान होने से अलगाव पैदा हुआ है। स्वमान में रहने से एकता, प्यार और सहयोग का वातावरण निर्माण किया जा सकता है।

उज्जैन विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० शिवमंगल सिंह सुमन ने कहा कि भारत की संस्कृति का मूल तत्व है – 'अनेकता में एकता', जिसका अनुभव आज उन्होंने इस सम्मेलन में किया। आगे आपने कहा कि "ओमशान्ति' शब्द में ईश्वरीय ताकत है। इसलिए शब्द को शास्त्रों में 'ब्रह्म' कहा गया है। ग्रीस से आई हुई कवियित्री डा० अग्नि वायावियानोस ने कहा – हमें केवल मानवों से ही नहीं अपितु पशु, पक्षी, पेड़, पौधे प्रकृति से आदर तथा प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। प्रकृति में भी संवाहिता है। प्रकृति में हमें संवाहिता का सौंदर्य ढूँढ़ना चाहिए।

डा० ग्रेवियल ओकारा, कवि एवं लेखक ने बताया कि लेखनी की क्या शक्ति है ? (What is power of pen ?) शब्द में ईश्वर की शक्ति है – ये बाइबिल में कहा गया है। नेपोलियन ने भी कहा कि तलवार से ज्यादा कलम की ताकत है। (A pen is mightier than a Sword) कलम को कमल समान बनाया जाये तो मानव और संसार का परिवर्तन हो सकता है। अपने विचारों में तथा सृजनों में परिवर्तन कर लेखक, कलाकार बेहतर विश्व के निर्माण में अपना योगदान कर सकते हैं।

अहमदाबाद के लेखक तथा कॉलम राइटर भ्राता वकुल त्रिपाठी ने बहुत सुन्दर ढंग से लेखक के धर्म की ओर ईशारा किया। उन्होंने बताया – लेखक या कलाकार की यात्रा 'जीवन का अर्थ' खोजने में है-। वह शब्दों द्वारा अपने अनुभवों की तथा संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करता है। लेखक तो बांसुरी Flute के समान है, वह जन-मन की भावनाओं को बजाता है। ब्रह्माकुमार नेविल, मेडिकल-जर्नालिस्ट, यू० के० ने बताया कि नेचुरल क्रियेशन सौंदर्यमय होता है, शुभ होता है। उन्होंने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि मेडिटेशन द्वारा प्रेम और सहयोग की शक्ति प्राप्त होती है। इससे नकारात्मक (Negative) तत्वों का प्रभाव कम रहता है। साक्षी भाव से जीवन को देखने से मुझे जीवन आनन्दमय लगा है और मेरी सर्जन शक्ति का विकास हुआ है।

ब्र० कु० बासवराज, संपादक, विश्व नव-निर्माण, हुबली ने बताया – 'मेटर' (Matter) से 'मेन्टल एज' (Mental Age) तक, कम्पयूटर युग तक मानव ने सफर किया, फिर भी मानव दुःखी और अशान्त है। वर्तमान दुःखी व अशान्त संसार को सर्व के सहयोग से सुखमय संसार में बदलना है। ब्रह्माकुमारी सुषमा जयपुर द्वारा साइलेन्स में योगाभ्यास कराया गया।

माउण्ट आबू – अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर कवियों, लेखकों और कलाकारों के लिये आयोजित कार्यशाला का एक दृश्य।

सुखमय संसार बनाने में समाज सेवकों का योगदान

माउण्ट आबू, ११ फरवरी १९८९

ब्रह्माकुमारी कुसुम बहन ने कहा कि समाज में आज बहुत दुःख व कष्ट हैं । विश्वास, सद्भावना व प्रेम का अभाव है । बेहतर दुनिया ऐसा संसार है जहाँ रहन-सहन का वातावरण ऊँचा हो, प्रेम, एकता, ईमानदारी हो, सबका सम्मानपूर्ण स्थान हो ।

ए० एस० मेहता ने कहा कि मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकतायें बढ़ने लगती हैं जब हम समाज में संगठित होकर रहने लगते हैं । उस समय समाज सेवा की भावना जागृत होना स्वाभाविक है । ब्रह्माकुमारी संस्था के द्वारा जो चरित्र निर्माण का कार्य हो रहा है, यह भी व्यक्तिगत सेवा है । अपने मौहल्ले में, अपने मित्र से उसकी चर्चा करता है तो यह भी एक समाज सेवा है । बाकी मानव मूल्यों को शिक्षा द्वारा स्थापित करना भी अति आवश्यक है क्योंकि इससे भावनाओं की कदर करना, नैतिकता को मूल्य देना जीवन की सबसे बड़ी जरूरत है । इसके निराकरण हेतु ब्रह्माकुमारी संस्थान का बहुत बड़ा योगदान है जो कि सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा युवा वर्ग में आध्यात्मिक जागृति पैदा करके, उनकी मादक आदतों को खत्म करके, उनमें दिव्य संस्कारों का बीजारोपण करता है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि आज हज़ारों युवा ब्रह्माकुमारी संस्थान की शिक्षाओं द्वारा वर्तमान सुखद और भविष्य उज्जवल बना रहे हैं ।

कर्नल जे० आर० दयाल, कमाण्डिंग आफिसर, मारीशस ने समाज सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके देश में ऐसे संगठन बनाये गये हैं जो इकट्ठा मिलकर सेवा भाव से ज़रूरतमन्दों की जरूरतें पूरी करते हैं । जनता के साथ दिल और दिमाग के साथ हम जुटे हुए हैं और हमने ऐसा ढाँचा बनाया हुआ है कि वार्षिक दो मीटिंग हम करते हैं । जनता हमें पैसे देती है, वाहन देती है, कपड़े देती है । उनका हम सदुपयोग करते हैं । सरकार की कुछ लिमिटेशन (सीमायें) रहती हैं, उनका हिसाब होता है । इसलिए उनकी सेवाओं के अलावा जो हम अपनी संस्थाओं के द्वारा सेवायें करते हैं, वह यह है कि अस्पताल में मरीजों को वीडियो, लेडिस विंग में अलग और जेन्ट्स विंग के लिए अलग से दिये हुए हैं और उनके मनोरंजन के लिये रेडियो द्वारा अच्छे-अच्छे कार्यक्रम दिये जाते हैं । बिना परिणाम सोचे हम अच्छी नियत से अच्छे नियमों का पालन करते हुए सेवा करेंगे तो उसका परिणाम बहुत अच्छा निकलेगा ।

ब्रह्माकुमारी आरती, इन्दौर ने कहा कि भिन्न-भिन्न समुदाय मिलकर समाज कहलाता है । अकेला व्यक्ति कोई भी रचनात्मक कार्य नहीं कर सकता । उसे संगठन चाहिए जिसमें रहकर व्यक्ति संगठित होकर बड़े से बड़ा कार्य कर सकता है । व्यक्ति समाज में मुखिया है । समाज में स्वार्थी वा निःस्वार्थी व्यक्ति, अनेक प्रकार की समाज सेवी संस्थायें दवाईयाँ, कम्बल आदि बांटने का कार्य करते हैं । यदि उनमें आध्यात्मिकता भी सम्मिलित कर दी जाये तो वे समाज सेवी संस्थायें सम्पूर्ण रीति से समाज सेवा कर सकती हैं। आध्यात्म से त्याग, तपस्या, सेवा भावना जागृत होती है । आज इतनी समाज सेवी संस्थाओं के होते हुए भी समाज सुधर क्यों नहीं रहा है ? इसका कारण समाज सेवा करने वालों में आध्यात्मिकता की कमी है । उन्होंने कहा कि आध्यात्म द्वारा मन परिवर्तन किया जा सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान से ही जीवन में श्रेष्ठता लाई जा सकती है ।

ब्रह्माकुमार प्रेम प्रकाश देहली ने कहा कि मानसिक परिवर्तन ही सबसे बड़ी समाज सेवा है । समाज सेवा में आध्यात्म लाना बहुत आवश्यक है । कार्यक्रम का संचालन ब्र० कु० राधा, राजयोग शिक्षिका, अजमेर ने किया ।

माउण्ट आबू—अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर समाज सेवकों के लिये आयोजित कार्यशाला में भाषण करते हुए ब्र० कु० आरती बहन।

सुखमय संसार का दिग्दर्शन

माउण्ट आबू– 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के खुले अधिवेशन में भाषण करते हुए भ्राता बी०सी० पटेल, निदेशक, यू०एन० सूचना केन्द्र, देहली।

माउण्ट आबू, ११ फरवरी १९८९

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार योजना के अन्तर्गत आयोजित सायंकालीन अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयुक्त प्रशासिका दादी जानकी जी ने सुखमय संसार का दृश्य दिखाया कि सुखमय संसार में सुख ही सुख है, दु:ख का नामोनिशान नहीं। वह संसार हमें सामने दिखाई पड़ रहा है। सहयोग में बड़ी शक्ति है। इस शक्ति से स्नेहयुक्त सुखमय संसार शीघ्र ही आने वाला है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के दिल्ली स्थित सूचना केन्द्र के निदेशक भ्राता बी० सी० पटेल ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि विश्व की दो शक्तियाँ रूस और अमेरिका अरबों डालर हथियारों पर खर्च कर रही हैं। आज विश्व का लाखों-अरबों रुपया फौज एवं हथियारों पर खर्च हो रहा है जबकि विश्व के लोगों को जीवन की मूलभूत आवश्यकता में भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की भी प्राप्ति नहीं हो रही है। लोग भूखों मर रहे हैं और बड़ी शक्तियाँ हथियारों की दौड़ में पैसा बहा रही हैं। अगर सभी देशों की सरकारें शक्ति से समस्याओं का समाधान कर लें तो मानवता का कल्याण होगा लेकिन यह हो नहीं रहा है। विनाशकारी हथियार बढ़ते ही जा रहे हैं। ये बड़े देश छोटे देशों को भी लड़ा रहे हैं। इसलिए सर्व के सहयोग से ही सुखमय संसार बन सकेगा, नहीं तो हिरोशिमा का दृश्य हमारे सामने है।

ग्याना के भारत स्थित उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण जी ने सुखमय संसार का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि "ईश्वर एक है और हम सब उसकी संतानें आपस में भाई-भाई हैं। इस भावना से विश्वभर में बन्धुत्व की भावना का विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि मुझे भी इसी भावना ने ब्रह्माकुमारियों के राजयोग से जोड़ा। इससे मेरे जीवन में जो तनाव था वह समाप्त हो गया।" उन्होंने कहा कि व्यक्ति के नैतिक मूल्य ही उसके चरित्र को बनाते हैं। मनुष्य के जीवन से विकार निकल जायें तो सारे झगड़े समाप्त हो जायें। सुखमय संसार में सभी एकता, प्रेम एवं भाईचारे से रहते हैं। प्रकृति सतोप्रधान होगी, सभी में सुन्दरता होगी। अत: रचनात्मक शक्तियों को लेकर हमें सुखमय संसार बनाने के कार्य में जुट जाना है।

तामिलनाड़ से पधारी ब्रह्माकुमारी शिवकन्या ने कहा कि 'सुखमय संसार' में एक धर्म होगा, एक राज्य होगा, कोई द्वैत नहीं होगा, सब में प्रेम होगा, प्रकृति मर्यादित होगी। उन्होंने अपना निजी अनुभव सुनाते हुए कहा कि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने मुझे सुखमय संसार का नज़ारा ऐसा दिखाया जिससे वर्तमान दु:खी संसार से मेरा मन हट गया और मेरा जीवन सुखमय बन गया। ऐसा सुखमय जीवन राजयोग के अभ्यास से बनता है। अत: जो अनुभूति मैंने प्राप्त की है, उसे सभी तक पहुँचाया जाये – यह मेरा लक्ष्य बना है।

डॉ० क्रिस्टोफ ओस्ट्रेस्की, उपाध्यक्ष, पोलिश पीस रिसर्च काउन्सिल, पौलेण्ड ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि सर्व के सहयोग से सुखमय संसार योजना का कार्य दो साल से चला है। तब से ही विश्व में शान्ति की भी चर्चायें बढ़ी हैं। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र के अनुरूप ही यह 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' का कार्य चल रहा है। आज सभी यह अनुभव कर रहे हैं कि शान्ति स्थापना का कार्य सबके सहयोग से ही हो सकेगा। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के ही महासचिव ने शान्ति के कार्य में विश्व स्तर पर सहयोग करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना की है और यू० एन० ओ० का पूर्ण सहयोग इस परियोजना में दिया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस परियोजना से विश्व सुखमय बनेगा।

सकारात्मक रास्ता रचनात्मक कार्यों के लिए

माउण्ट आबू, 12 फरवरी 1989

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार योजना के अन्तर्गत आयोजित सम्मेलन में रचनात्मक कार्यों के लिये सकारात्मक तरीका बताते हुए सैंफ्रान्सिसकों से पधारी ब्रह्माकुमारी डैनिस जी ने कहा कि बुराई में से भी अच्छाई निकाल ली जाये । हिंसा, युद्ध एवं तनाव के इस संसार में अहिंसा, प्रेम एवं शान्ति की शक्ति से सुखमय संसार बनाने का कार्य किया जा सकता है ।

ई० वि० वि० की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने अपने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि क्रियात्मक कार्यों में राजयोग के द्वारा अटल, अचल बनकर अभय रह कार्य करना है । राजयोग हमें अभय बनाता है । हम सभी परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं और अगर उनके बताये हुए मार्ग पर सभी चलेंगे तो विश्व में एक सुख-शान्तिमय राज्य आ जायेगा । आज निर्माण का समय है । 'शान्ति, प्रेम का निर्माण हमें करना है '। यह संसार पूर्व में सुख-शान्तिमय था, अब फिर अवश्य ही सुख शान्तिमय बन ही जाना है । आपने अपने अनुभव से बताया कि राजयोगी जीवन बहुत मीठा जीवन है । यह अविनाशी सम्पत्ति है जिसे एटमबम भी नहीं जला सकेगा । आत्मबल, एटमबम से ज्यादा शक्ति-शाली है । यह घड़ी है भगवान् से वरदान प्राप्त करने की और विश्व को भाग्यवान् बनाने की ।

अटलबिहारी बाजपेयी, पूर्व विदेश-मंत्री ने कहा कि इक्कीसवीं सदी में आध्यातम का बोलबाला होगा, सुखमय संसार होगा । सुख बाहर नहीं, अन्दर है । पैसे से दवा खरीदी जा सकती है, स्वास्थ्य नहीं । विज्ञान ने भौतिक साधन दिये हैं परन्तु सुख-शान्ति नहीं दी है । मछली की तरह सागर में तैर सकते हैं, पंछी की तरह हवा में उड़ सकते हैं परन्तु इन्सान की तरह धरती पर चल नहीं सकते हैं । आज विज्ञान ने जहाँ सुख-सुविधा के साधन दिये हैं वहां विनाशकारी एटमबम भी तैयार हैं । यह विज्ञान नहीं जो सुखमय संसार बना सके, यह तो माउण्ट आबू में आकर ही सुखमय बनाने का तरीका सीखना पड़ेगा ।

उन्होंने कहा कि मैं एक जिज्ञासु की तरह आया हुआ हूँ, यहाँ न कोई राजनेता हूं, न कोई भूतपूर्व विदेशमंत्री हूं । मैं यहां के अनुशासन, प्रेम एवं सेवाभाव से बहुत ही प्रभावित हूं । जीवन में पहली बार मैं इस संस्था के सम्पर्क में आया हूँ । यहां के रचनात्मक क्रियाकलाप को देखकर मुझे आभास हो रहा है कि बीसवीं शताब्दी तो वैज्ञानिक प्रगति की रही जिससे विश्व में अशान्ति बढ़ी है, लेकिन इक्कीसवीं शताब्दी में आध्यात्मिक शक्तियों का ही बोलबाला होगा, जिससे सुखमय संसार की परिकल्पना अवश्य ही साकार होगी ।

ट्रिनिडाड के भारत स्थित उच्चायुक्त महामहिम प्रेमचन्द दास जी ने कहा कि नया विश्व बहुत ही सुखमय होगा । ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा संचालित सर्व

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में मंच पर उपस्थित हैं (बाएं से) बहन जेना एगर, ब्र० कु० रमेश शाह, भ्राता अटल बिहारी बाजपेयी, पूर्व विदेश मंत्री, दादी प्रकाशमणि जी, भारत में ट्रिनीडाड तथा टोबेगो के उच्चायुक्त भ्राता पी० दास तथा ब्र० कु० डेन्सी बहन।

के सहयोग से सुखमय संसार का स्वप्न साकार हो रहा है । सकारात्मक विचार रखने से ही यह कार्य सफल होगा ।

ब्रह्माकुमार रमेशशाह, बम्बई ने कहा कि भय सब पापों एवं दुःखों का कारण है । लेकिन जब हम अपने को सर्वशक्तिवान की सन्तान निश्चित कर लेते हैं तो हम भय से मुक्त हो जाते हैं । उन्होंने कहा कि अनुमान ही विकल्पों को जन्म देता है । अतः अनुमान के नुक्सान से बचने के लिये हमें हनुमान बन कर, अनुमान छोड़ कर शुभ संकल्प ही करने हैं ।

उन्होंने बताया कि पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने नव विश्व के आगमन का साक्षात्कार किया और उसके निर्माण का संकल्प कर लिया । कितना भी विघ्न, बाधायें आने पर अपने संकल्प को ढीला नहीं किया और उनका संकल्प साकार होता जा रहा है । हम सभी आज यह शुभ संकल्प लेवें कि एक-एक, एक-एक को राजयोगी बनायेंगे । सुखमय संसार मेरे लिये मेरे द्वारा अवश्य बनेगा – यह संकल्प ले लो तो सुखी संसार आने ही वाला है । इसी अवसर पर यू० एस० ए० की एक्टिवेटर, जीना यीगर ने दृढ़ संकल्प की, वीडियो फिल्म प्रदर्शित की । कार्यक्रम का संचालन अमीरचंद जी ने किया तथा प्रसिद्ध संगीत निदेशक, भ्राता राजकमल जी ने प्रसिद्ध टी० वी० सीरियल 'महाभारत' से सम्बन्धित गीत प्रस्तुत किये ।

कार्यशाला

सुखमय संसार के निर्माण में संचार साधनों का योगदान

माउण्ट आबू, १२ फरवरी १९८९

'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित सम्मेलन में पत्रकारों एवं संचार से सम्बन्धित जनों के लिये आयोजित चर्चा-गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्री हरकिशनलाल भगत जी ने कहा कि संचार माध्यमों से सम्बन्धित लोग विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । समाचार पत्र एवं सिनेमा ने विश्व को एक भाईचारा एवं नजदीकी दी है । उन्होंने कहा कि यदि पत्रकार सकारात्मक विचारधारा वाला एवं मानव मूल्यों से युक्त है तो देवता है । वह विश्व को सुखमय बनाने में अपनी कलम का सहयोग कर सकता है । यदि उसका स्वयं का चरित्र ठीक नहीं तो विनाश भी करा सकता है । उन्होंने सर्व के सहयोग से सुखमय संसार कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि निश्चय ही यह प्रयास सफल होगा और विश्व सुखमय बनेगा ।

ब्रह्माकुमार करूणा, जनसम्पर्क अधिकारी, ई० वि० वि० ने अपना पेपर पढ़ा जिसमें संचार साधनों को सुखमय संसार बनाने में क्या योगदान करना है, विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि यदि रचनात्मक तरीके से, बुराई से भी अच्छाई ग्रहण करके सर्व को अपने अन्दर गुणों से समा लें तो उच्च चरित्र से प्रेरित मीडिया सुखमय संसार बनाने में सहयोगी होगा ।

चण्डीगढ़ के 'ट्रिब्यून' समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक वी० ए० नारायन ने चर्चा में बोलते हुए कहा कि आज अच्छी बातों की खबर न छापकर

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में भ्राता आर०के० करंजिया, मुख्य सम्पादक, 'ब्लिटज' पधारे। वे दादी प्रकाशमणि जी से मिलते हुए।

माउण्ट आबू– 'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में भ्राता परीक्षित बंसल द्वितीय रहे। उन्हें पुरस्कृत करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

मीडिया उन सनसनीखेज समाचारों को ज्यादा महत्व देता है जिनसे लोगों के चरित्रों पर गलत प्रभाव पड़ता है। समाज भी ऐसा ही बन गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने को सही तथा दूसरों को गलत समझता है। पत्रकार एक सामाजिक प्राणी है। जैसा समाज है वैसा पत्रकार है, वैसी ही खबरें छापता है। तो सुखमय संसार के लिए पहले हमें समाज के वर्तमान मूल्यों को बदलना होगा जिसमें धन का महत्व नहीं, चरित्र का महत्व है। तब ही सुखमय संसार होगा।

जर्मनी की बहन बारबारा रूटिंग ने कहा कि संचार माध्यमों के द्वारा जहां दुःख की बातें फैलाई जाती हैं वहां सुखमय संसार की बातें भी फैलायें।

संसद सदस्य एवं 'हितवाद' समाचार पत्र के प्रबन्धक सम्पादक बनवारी लाल पुरोहित जी ने अपनी गम्भीर चर्चा में बताया कि भारत का प्रेस आर्थिक कारणों से परतंत्र है। अतः परतंत्र पत्रकार सुखमय संसार बनाने में क्या सहयोग कर सकता है, जबकि रूस एवं अमेरिका जैसी शक्तियां इस विश्व का विनाश करने तैयार खड़ी हैं। उन्होंने कहा कि पत्रकार अच्छी खबरों को प्रमुखता से छापें। दादी निर्मलशान्ता जी ने अपने आशीर्वाद प्रवचन में कलम की ताकत से विश्व-परिवर्तन का महत्व बताया कि सुखमय संसार लाने की बातें अवश्य लिखें, फैलायें।

डा० प्रभाकर माचवे, मुख्य संपादक, चौथा संसार, इन्दौर ने अपनी मनोरंजक चर्चा में संचार माध्यमों के महत्व को बताया कि ये माध्यम गन्दे, अश्लील संचारों से बच्चों के चरित्र न बिगाड़ें। रेडियो, दूरदर्शन अच्छी बातें संचारित करें। दृढ़ता से कमज़ोरी हटाकर आध्यात्मिकता लानी है। रेडियो जर्नलिस्ट सुभान्ति पुडजी, इन्डोनेशिया ने कहा – संचार सुखमय संसार ला सकते हैं। हालैण्ड की जैकलिन ने कहा कि संचार को सकारात्मक विचारों को ही प्रसारित करना है, तभी व्यक्ति सुधार को पायेगा।

'हिन्दुस्तान' समाचारपत्र के आर० रस्तोगी जी ने कहा कि पत्रकार बन्धु स्वयं संचारित, शान्तिप्रिय एवं अहिंसक बनें तो दूसरों को कहने का अधिकार है। वही नैतिकता यहाँ ब्रह्माकुमारी बहनें राजयोग द्वारा सिखाती हैं।

प्रसिद्ध समाचार पत्र ब्लिट्ज के मुख्य सम्पादक आर० के० करंजिया ने कहा कि इतिहास पुनरावृत्ति को पाता है। एक तरफ हिंसक ताकतें अपना कार्य कर रही हैं तो दूसरी तरफ अहिंसकता आ रही है। उन्होंने अपने अनुभव सुनाये कि जिस समय हिरोशिमा में बम गिरा, बापू सत्य अहिंसा के बल पर आजादी का बिगुल बजा रहे थे। अभी भी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा यह विश्व-शान्ति एवं सर्व के सहयोग से सुखमय संसार उसी सत्य, अहिंसा एवं शान्ति के कार्य का प्रसारण है। इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

न्यूयार्क की ब्र० कु० मोहिनी बहन ने भाषण में सर्व के सहयोग से सुखमय संसार बनाने की योजना पर विश्व भर के समाचार सुनाते हुए संचार माध्यमों को इस कार्य में सहयोगी बनने का सुझाव दिया।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के अवसर पर पत्रकारों के स्नेह-मिलन में मंच पर उपस्थित हैं (बाएं से) ब्र० कु० मोहिनी बहन, ब्र० कु० निर्मलशान्ता, भाता एच०के०एल० भगत, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार, ब्र० कु० करुणा तथा भाता आर०के० करंजिया, मुख्य सम्पादक, ब्लिटज।

कार्यशाला

बेहतर दुनिया के लिये राजनैतिक सिद्धान्त

माउण्ट आबू, १२ फरवरी १९८९

उपरोक्त विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए बहन मौरिक, पूर्व शिक्षा मन्त्री, कनाडा ने कहा कि आज शांति लगभग दुनिया से खत्म-सी होती जा रही है। हमें उसे फिर से लाने के लिये प्रजातन्त्र को मजबूत बनाना होगा। हमारा अस्तित्व व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये नहीं बल्कि विश्व की सेवा के लिये है। जिसके लिये हमें कुछ रचनात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। विश्व को बेहतर बनाने के लिये मेरा अपना सहयोग स्वयं को बदल कर ही करना चाहूँगी।

भ्राता अलफोरंस एरीना, सीनेटर, स्पेन ने कहा कि मैं नैतिक मूल्यों को बहुत पसन्द करता हूँ और समाज में शांति लाने के लिये मुझे कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है जिसके फलस्वरूप मैं राजनैतिक दबाव के कारण मानसिक तनाव और अशांति के कारण परेशान हो जाता हूँ। जब हम राजनैतिक क्षेत्र में उतरते हैं तो करना हम कुछ चाहते हैं लेकिन जनता की इच्छा भिन्न होने के कारण कर नहीं पाते हैं। अतः आध्यात्मिकता का सहारा लेना अति आवश्यक हो जाता है। प्रेम, प्यार पैदा करने के लिये सिद्धान्तों और मानव मूल्यों की स्थापना करना बहुत जरूरी है।

भ्राता विनायक भाई, विधायक शोलापुर ने कहा कि राजनीतिज्ञों की आजकल करनी और कथनी में अन्तर है। अब करनी, कथनी को एक करने के लिये हमें आध्यात्मिकता की आवश्यकता है। जिससे आत्माओं को सबल बनने तथा कमेन्द्रियों पर राज्य करने की शक्ति मिलती है। उन्होंने अपने वक्तव्य में यह भी कहा कि हमारे सामने गांधी जी का सिद्धान्त है कि उन्होंने नैतिक बल के आधार पर जब ये दो शब्द कहे कि 'भारत छोड़ो' तो इन दो शब्दों ने जादू का काम किया।

माननीय अटल बिहारी बाजपेयी, पूर्व विदेश मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रसिद्ध नेता ने कहा कि मैं इस बात से सहमत हूँ कि राजनेता को अधिक सावधानी से चलना पड़ता है क्योंकि राजनीति में गिरने के बहुत ज्यादा अवसर आते हैं। राजनेता को सदा यह समझना चाहिये कि मैं तो केवल निमित मात्र हूँ और जनता की सेवा का साधन हूँ। उन्होंने अपने वक्तव्य में इस बात पर जोर दिया कि सत्ता के लिये लक्ष्मण रेखा खींचने की आवश्यकता है क्योंकि इस क्षेत्र में सेवा का स्थान प्रमुख है। सत्ता देश की सेवा के लिये है, सिहांसन प्राप्त करने के लिये नहीं। इसमें नैतिकता का बन्धन अनिवार्य है।

राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा ने कहा कि सुखमय संसार बनाने के लिये हमें स्वयं का परिवर्तन करना अति आवश्यक है। दिल की आवाज जब होती है तो स्वयं का परिवर्तन स्वतः ही होने लगता है। इस योजना को सफल बनाने के लिए मन, वचन, कर्म मे पवित्रता का सहयोग देकर ही पूरा किया जा सकता है। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमार बलदेव, जयपुर ने किया।

माउण्ट आबू– अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर राजनेताओं के लिये आयोजित कार्यशाला में भाषण करते हुए भ्राता अटल बिहारी बाजपेयी जी, पूर्व विदेश मंत्री।

सहयोग की भावना का विकास

माउण्ट आबू, १२ फरवरी १९८९

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार योजना के अन्तर्गत आयोजित सम्मेलन के खुले अधिवेशन में बोलते हुए भारत के सूचना एवं प्रसारण, पार्लियामेंट कार्य मंत्री माननीय हरकिशनलाल भगत जी ने कहा कि "मुझे खुशी है कि आज मैं इस भव्य कार्यक्रम में शामिल हुआ हूँ, जिसमें विश्व-भर से लोग सुखमय संसार बनाने की भावना से सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। मुझे यह भी खुशी है कि यह ब्रह्माकुमारी विश्व-विद्यालय संयुक्त राष्ट्र संघ की सामाजिक एवं आर्थिक सलाहाकार समिति का स्थायी सदस्य है। शांति का सन्देश हमारे देश के सन्तों, महापुरुषों ने विश्व में सदैव फैलाया है। जियो और जीने दो का हमारा सिद्धान्त है। गांधी जी ने भी सत्य, अहिंसा, प्रेम का सन्देश विश्व को दिया एवं इसी सन्देश को फैलाने के लिए यह संस्था कार्य कर रही है।

ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी ने इस अवसर पर सहयोग की भावना का विकास कैसे हो, उसका क्या महत्व हो,—विषय पर बोलते हुए कहा कि बिना सहयोग के विश्व का कोई कार्य नहीं चल सकता है। शरीर के सभी अंगों का आपस में तालमेल है। एक भी अंग के खराब होने से सारे शरीर का सन्तुलन बिगड़ जाता है। प्रकृति के तत्व भी सहयोगी हैं। सहयोग से ही हमारा समाज एवं संसार चल रहा है। बिना एक दो के सहयोग के समाज चल नहीं सकता है।

भारत सरकार की समाज कल्याण उपमंत्री बहन सुमति औरांव ने कहा कि आज स्वार्थ के वश व्यक्ति उन भाई-बहनों के पास तो जा नहीं रहा जहां आवश्यक है, बाकी व्यर्थ में समय, शक्ति बर्बाद कर रहा है। आज भाई, भाई को नहीं पहचान रहा है। अपने पड़ौसियों के दुख:धर्म को अपना नहीं समझ रहे हैं। एक दूसरे के साथ प्रेम भावना एवं अपनापन रखना ही ईश्वर के पास पहुँचना है। भगवान् गरीब निवाज़ है, वह गरीब के दुख:दर्द को प्रेम से दूर करने पर मिलेगा। हम प्यार उन्हें दें जिन्हें प्यार चाहिए, तब ही विश्व में शांति हो सकती है। आज सारे संसार में त्राहि-त्राहि मची है, लोग शांति की चाह में भटक रहे हैं। परन्तु यह खुशी की बात है कि यहां माउण्ट आबू में दुनिया में शांति लाने के लिये सम्मेलन में विचार किया जा रहा है।

अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी ने अपने मधुर सन्देश में कहा कि सबसे बड़ा सहयोग दिव्य आत्मिक सहयोग है। यह सहयोग एक योगी ही दे सकता है जिसका सच्चा स्नेह एक पिता के साथ ही है और उसके कार्य में जो पूरी तरह सहयोगी है। सच्चे पिता को जिसने जाना हो, पहचाना हो, वही इस आत्मिक शक्ति को दूसरों तक पहुँचा सकता है। उस परमपिता का जिसे परिचय हो जाये तो वह कुर्बान हो जाये, बलिहार हो जाये। पतितों को पावन बनाने के कार्य में उस सच्चे परमपिता का सहयोग करता है। हरेक में कुछ न कुछ विशेषताएँ हैं उन विशेषताओं को बाप (परमात्मा) जानता है, इसलिए बाप ने बच्चों को बुलाया है। संकल्प की शक्ति से पवित्र दुनिया अवश्य स्थापित होगी क्योंकि पावन बनाने का संकल्प बाप का है और बाप जानते हैं कि मेरे बच्चे पावन देवता थे, इसलिए उन्हें फिर से देवता समान बनाना है।

यह है नि:शस्त्रीकरण के अन्तर्गत नष्ट की गई मिसाइल का वह टुकड़ा जो सोवियत शान्ति समिति ने ई० वि०वि० की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी को भेंट किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अमेरिका स्थित सूचना केन्द्र के निदेशक डॉ० एरिड जेन्सन ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ अपने सदस्य देशों का सहयोग लेने में सफल नहीं हो रहा है लेकिन आध्यात्मिक शक्ति से यह संस्था कार्य करके सुखमय विश्व बना सकती है। भ्राता शांतिलाल सुमरूया, बंबई के उद्योगपति ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सहयोग की शक्ति कलियुग में सबसे बड़ी शक्ति है, उस सहयोग की शक्ति से यहाँ जो कार्य हो रहा है, उससे ही सुखमय विश्व बनेगा।

आस्ट्रेलिया के ब्रह्माकुमार चार्ली ने कहा कि प्रेम एवं सहयोग से हम किसी का भी दिल जीत सकते हैं। सर्व के सहयोग में स्वीकारात्मक भावना का भी महत्व है। हर इस बात की अच्छाई को ग्रहण करते जायें तो सभी में सौहार्द अवश्य पैदा होगा और इस प्रकार सुखमय संसार बन जायेगा।

कार्यक्रम का संचालन इन्दौर ज़ोन के निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने किया तथा राजयोग का अभ्यास नई दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहन जी ने कराया ।

विश्व परिवर्तन का आधार–'सहयोग'

माउण्ट आबू, १३ फरवरी, १९८९

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' महासम्मेलन के समापन समारोह में बोलते हुए जौर्डन की सरकार की शिक्षामंत्री बहन अवला अबू जोबार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "जोर्डन में सकारात्मक विचार रखने की शिक्षा दी जाती है। वहाँ स्कूलों के बच्चे जोर्डन को साफ रखते हैं। सर्व के सहयोग से सुखमय संसार कार्यक्रम हमारे यहां चल रहा है। प्रत्येक गरीब-अमीर सभी समान रूप से शांति, प्रेम एवं न्याय चाहता है। इसलिए सर्व की इच्छा के अनुकूल सर्व के सहयोग से सुखमय संसार बन जायेगा।"

अमेरिका के अन्ड्रयू हैन्सिल, निदेशक, स्टेट वोटर रजिस्टेशन आफ यंग डैमोक्रेटस ने कहा कि सर्व के सहयोग से सुखमय संसार का कार्य विश्व स्तर पर चल रहा है। उन्होंने अपने शहर के मेयर द्वारा भेजी हुई घण्टी दादी प्रकाशमणि जी को प्रदान की जो खुशी एवं जागृति का प्रतीक है कि शीघ्र ही सुखमय संसार बनेगा।

दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ने बताया कि "सारा विश्व हमारा परिवार है, इस परिवार को हमें पावन बनाना है। इसके लिये एकता, सहयोग एवं सम्मान की अवश्यकता है।" दादीजी ने कहा कि "विश्व के अनेक देशों में सर्व के सहयोग से सुखमय संसार बनाने की योजना चल रही है। इसमें विश्व के हर वर्ग बूढ़े, बच्चे, जवान, गरीब-अमीर, किसान, मजदूर, वकील, डॉक्टर आदि प्रत्येक जन के सहयोग से सुखमय संसार बनाना है। इसमें प्रकृति के तत्वों का भी सहयोग चाहिए। इसके लिए स्वयं को बनाना है योगी, दूसरों के लिये बनो सहयोगी और सकारात्मक बातों में बनो प्रयोगी। यह विश्व परिवार का कार्य है। विश्व को सुन्दर बनाने के लिये हर वर्ग, व्यक्ति, हर वस्तु सुन्दर बने तो सुखमय संसार बन ही जाना है"

भ्राता जगदीशचन्द्र जी ने कहा कि "इस सम्मेलन के प्रारम्भ होने से पूर्व ८ से १० फरवरी तक यहाँ ४० देशों के प्रतिनिधियों की एक शिखर वार्ता सर्व के सहयोग से सुखमय संसार बनाने की योजना पर की गयी थी। यह योजना केवल भारत के ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियों की नहीं वरन् सारे विश्व की है। इसमें अनेक विश्व की सरकारें, व्यक्ति, संस्थाएँ सहयोगी हैं क्योंकि विश्व हम सबका है। हम सबको मिलकर इसे अच्छा बनाना है। हम बदलेंगे युग बदलेगा। सकारात्मक चिन्तन होगा तो विश्व बदलेगा। रचनात्मकता होगी तो विश्व बदलेगा। बेहतर संसार में हरेक समान रूप से सुखशांति से रहेगा। परस्पर

माउण्ट आबू–सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के समापन समारोह में उपस्थित वक्तागण ई० वि० वि० की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के साथ ग्रुप फोटो में।

माउण्ट आबू– अमेरिका में पेनसिलवानिया के यंग डेमोक्रेटस के मतदाता पंजीकरण निदेशक भ्राता एन्ड्रयू हेन्सिल दादी प्रकाशमणि जी को फिलाडिलफिया शहर की ओर से 'लिबर्टी बेल अवार्ड' देते हुए। भ्राता लार्ड एनल्ज साथ में सहयोग देते हुए।

सम्मानजनक व्यवहार करेगा। दूसरों के विचारों को आदर एवं महत्व देना ही सुखमय संसार बनाने का कार्य सम्पन्न करना है। इसमें हमारा भी लाभ है और विश्व भी बेहतर बन जाता है।

डॉक्टर एस०वी० चित्ती बाबू, पूर्व उपकुलपति, एनमलाई विश्वविद्यालय, मद्रास ने कहा कि मुझे यहाँ इस सम्मेलन में आकर ऐतिहासिक, दार्शनिक, योगिक अनुभव हुआ है। यह सम्मेलन अपने आप में एक अनूठा सम्मेलन है जिसमें विश्वभर के लोगों ने विश्व को बेहतर बनाने के लिये गम्भीर विचार किये हैं, निष्कर्ष निकाले हैं। माउण्ट आबू की यह १९८९ की घोषणा सर्वोत्तम घोषणा है क्योंकि इसमें सारे विश्व का भला समाया हुआ है।

भ्राता आर०के० करंजिया, मुख्य सम्पादक, ब्लिटज, बंबई ने अपने बुद्धिमतापूर्ण प्रवचन में बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रीय सहमती का अभियान छेड़ा था। ब्रह्माकुमारियों का यह अभियान अन्तर्राष्ट्रीय सहमती की स्थापना कर रहा है। विश्व शांति और विश्व भातृत्व अभियान के लिए अनेकानेक महापुरुषों ने प्रयास किया पर उनका प्रयास भौतिकवादी होने के कारण उन्हें सफलता नहीं मिली। पर विश्व सहयोग के द्वारा सुख शांति पूर्ण संसार का यह आह्वान आत्मभाव और आध्यात्मिकता पर आधारित होने के कारण अवश्य सफल होगा।

न्यायाधीश अब्दुल सत्तार कुरेशी, न्यायाधीश, गुजरात हाइकोर्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज हम जिस दौर से गुजर रहे हैं, वह एक नाजुक दौर है जिसमें हरेक को सोचना पड़ेगा कि हमारा भविष्य क्या होगा? मनुष्य ने हजारों सालों से ऐसे बुरे कार्य किये हैं कि उनसे जानवर भी शर्मिंदा होंगे और आज तो यह मानव इस सृष्टि के एटम बमों से नष्ट करने के लिये तैयार खड़ा है। इस समय हम में से प्रत्येक मानव को यह सोचना होगा कि इस विश्व को बचाने के लिये हम क्या करें? हमारा देश ऋषि-मुनि, साधु-संतों का देश है। यह आध्यात्म का सन्देश दुनिया को देता आया है, आज भी शांति-अहिंसा का सन्देश भारत ही विश्व को दे रहा है। भले ही पाश्चात्य देश भौतिक रूप से सम्पन्न हैं परन्तु सुख-शांति के लिये वे कातर दृष्टि से भारत के मुखापेक्षी हैं। झगड़ों का कारण ईर्ष्या, द्वेष एवं नफरत है। भाईचारे की एवं प्रेम-शांति की सहानुभूति पूर्ण भावना से सुखमय संसार–यह हमारी ब्रह्माकुमारी बहनें बनाने के लिये प्रयत्नशील हैं। सुखशांति के लिये ईर्ष्या, द्वेष को समाप्त कर सहयोग की भावना जाग्रत करनी पड़ेगी। सहयोग की भावना ही विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करेगी। हम आत्मा हैं, एक पिता की सन्तान हैं, इस विश्व परिवार के सदस्य हैं, आकाश की छत के नीचे इस घर में पार्ट खेल रहे हैं।

कार्यवाही का संचालन ब्रह्माकुमारी उषा बहन ने किया।

माउण्ट आबू–'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में डा० एस०एन० पाण्डेय प्रथम रहे। उन्हें प्रथम पुरस्कार देते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

आबू-घोषणा-पत्र

संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव तथा "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" योजना के सह-अध्यक्ष डॉ० जेम्स जोना ने योजना की अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार समितियों के ४० देशों के सदस्यों के त्रिदिवसीय शिखर सम्मेलन और गोलमेज बैठकों के बाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के पूर्व माउण्ट आबू-घोषणा-पत्र जारी किया। संवाददाता सम्मेलन में इस सम्मेलन हेतु अपने सहयोग की निशानी के अन्तर्गत सोवियत संघ द्वारा निःशस्त्रीकरण के अन्तर्गत नष्ट किए गये ३० सेन्टीमीटर के प्रथम प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) का टुकड़ा तथा इससे सम्बन्धित विवरण उपाध्यक्ष, सोवियत पीस कमेटी, मिस्टर एलेक्जेन्डर फिलसरकोब्स्की ने योजना की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी को भेंट किया।

घोषणा-पत्र में सुखमय संसार की स्थापना के लिए विश्व के समस्त मानवमात्र को एकजुट होकर परस्पर सहयोग का आह्वान किया गया है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों और लक्ष्यों का समर्थन करने का वचन दिया गया है। नकारात्मक विचारों और टकराव के कारण हथियारों की होड़ से होने वाली आर्थिक हानि को मिटाने का लक्ष्य रखा गया है। आपसी भेदभाव को दृढ़ता से रोककर सुखमय संसार बनाने हेतु सभी ने मिलकर शांतिदूत के रूप में कार्य करने का वचन दिया है।

इस घोषणा-पत्र की प्रतियाँ संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव, सदस्यों, विभिन्न देशों और राज्यों की सरकारों, अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों को भेंट करके उनसे समर्थन और सहयोग की अपील की जायेगी। विश्वभर की जनता और सरकारों से १९९० में एक दिन 'विश्व सहयोग दिवस' के रूप में मनाने और हर वर्ष इस दिन को मनाये जाने की अपील की जायेगी। परस्पर सद्भाव और सहयोग को बढ़ाने के लिए नये अनुसंधान और उपायों का विकास किया जायेगा जिससे युद्ध और तनाव कम होकर शान्तिपूर्ण स्थिति कायम हो सके। घोषणा-पत्र की कार्ययोजना में 'विश्व सहयोग बैंक' के माध्यम से विभिन्न व्यक्तियों और संगठनों के विचारों का परस्पर आदान-प्रदान सभी वर्गों एवं व्यवसायों के व्यक्तियों का स्वैच्छिक समर्थन एवं सहयोग, यूनीसेफ तथा यूनेस्को आदि के सहयोग से विभिन्न सेवा कार्यक्रम हाथ में लेना, पर्यावरण संरक्षण, मानव के नैतिक उत्थान के लिए आध्यात्मिक शिक्षा के कार्यक्रम शामिल किये गये हैं।

माउण्ट आबू–'सोवियत शान्ति समिति' के उपाध्यक्ष भ्राता अलेक्जेंडर जी दादी प्रकाशमणि जी को निःशस्त्रीकरण के अन्तर्गत नष्ट की गई मिसाइल का एक टुकड़ा भेंट करते हुए।

माउण्ट आबू–'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए भ्राता ए० पालकुडी, एम०ए०।

माउण्ट आबू–'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में बहन डा० चेतना को सांत्वना पुरस्कार देती हुई दादी प्रकाशमणि जी।

माउण्ट आबू में आयोजित 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' में ६० देशों के समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधिगण, अति विशिष्ट व्यक्ति पधारे। वे ओमशांति भवन के समक्ष ई० वि०वि० की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य वरिष्ठ ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ एक ग्रुप फोटो में।

माउण्ट आबू– अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर वैज्ञानिकों एवं तकनीकज्ञों के लिये आयोजित कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए भाता टी० साहू, रीडर, क्राइस्ट कालेज, कटक।

माउण्ट आबू – 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन' के अवसर पर न्यायविदों के लिये आयोजित कार्यशाला का दृश्य।

इलाहाबाद में 'महाकुम्भ' के अवसर पर आयोजित 'जीवन दर्शन मेला' सम्पन्न

जन-जन को सुख-शान्ति का अनुभव कराने हेतु महाकुम्भ के अवसर पर 'जीवन दर्शन आध्यात्मिक मेले' का आयोजन किया गया। यह मेला १०-१-८९ से १२-२-८९ तक चला। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर इस मेले का शुभ उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्वामी प्रकाशानन्द जी, जगद्गुरु आश्रम हरिद्वार, प्रमोद तिवारी, परिवहन राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

अति दूर-दूर से यात्रा कष्ट उठाकर महाकुम्भ में पधारने वाले वृहद् जन समुदाय के लाभार्थ विश्व भर के मूर्धन्य विद्वानों, साहित्यकारों, धर्माचार्यों, शिक्षाविदों, युवाओं, महिला सम्मेलनों का आयोजन भी किया गया।

दिनांक ११-१-८९ को सर्व के सहयोग से सुखमय संसार नामक सम्मेलन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिनांक १६-१-८९ को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ० राजलक्ष्मी वर्मा प्रयाग विश्वविद्यालय की संस्कृत विभाग की रीडर ने कहा कि नारी इस सृष्टि की दिव्यता का प्रतीक है। इसके लिए यह विश्व-विद्यालय जो कार्य कर रहा है वह बहुत ही स्तुत्य है।

दिनांक १७-१-८९ को युवा वर्ग सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि अभय अवस्थी, उपाध्यक्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, छात्र संघ ने कहा कि आज का युवा वर्ग पतन की ओर जा रहा है। अतः दोनों विश्वविद्यालयों के दर्शन में सामंजस्य होवे।

दिनांक १८-१-८९ को विश्व-शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी विध्यानन्द जी महाराज सरस्वती, स्वामी हर्षानन्द जी रामकृष्ण मिशन, स्वामी आनन्द देव जी टाटा बाबा, पायलेट बाबा, बाबा सन्त राम शरण दास जी विभिन्न वक्ताओं ने सुन्दर विचारों द्वारा विषय का स्पष्टीकरण करते हुए सहयोग देने की आकांक्षा प्रकट की।

दिनांक १९-१-८९ को साहित्यकार सम्मेलन का आयोजन अपराह्न २.३० से ५ बजे तक सम्पन्न हुआ जिसमें साहित्यकार हरि लाल पाण्डेय, सम्पादक, अधिवक्ता, उच्च न्यायालय ने बताया कि साहित्य का प्रयोजन समाज के हित में रचा गया है। जो रचना कल्याणप्रद है, वही साहित्य है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ० रामकुमार वर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि साहित्य का उद्देश्य मानव कल्याण ही है। मानव के दैवीय गुणों को विकसित करने में साहित्य का सबसे अधिक योगदान है।

सम्मेलन की अध्यक्षा राजयोगिनी दादी आत्म इन्द्रा जी क्षेत्रीय संचालिका उ०प्र० मंडल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि साहित्य के साथ अध्यात्म का समिश्रण होना चाहिए, तभी संसार के लिए मंगलकारी हो सकता है। अतः साहित्यकार की भूमिका उस दलाली की है जो समष्टिगतहित को ध्यान में रखते हुए साहित्य और अध्यात्म के समन्वय से समाज में बदलाव लाये।

देश के हजारों बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, प्रशासकों, डॉक्टरों, युवकों, महिलाओं शिक्षाविदों, समाजसेवी संस्थाओं के व्यवस्थापक, महामण्डलेश्वर, उद्योगपति, न्यायविद्, राजनीतिज्ञों ने भाग लिया व प्रतिदिन १० से १५ हजार दर्शनार्थियों ने मेला देखा। उत्तर प्रदेश प्रान्त के प्रमुख पत्र 'दैनिक जागरण', 'अमृत-प्रभात', 'आज', आदि अखबारों में प्रतिदिन समाचार प्रकाशित हुए। साथ ही आकाशवाणी ने भी इस जीवन-दर्शन मेले का समाचार प्रसारण किया।

दिनांक ३०-१-८९ को न्यायविद् सम्मेलन का आयोजन त्रिवेणी रोड, कुम्भ नगर के प्रशासन पंडाल में किया गया जिसकी अध्यक्षता दादी राजयोगिनी जानकी जी, सहप्रशासिका, ई० वि० वि०, आबू पर्वत, मुख्य अतिथि भ्राता केशरी नाथ त्रिपाठी, अध्यक्ष इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उ०प्र० भ्राता वीर भद्र जी, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट कानपुर, बहन गायत्री मोदी जी, मोदीनगर, बहन ग्लोरिया, प्रमुख अधिवक्ता, मैक्सिको आदि ने भाग लिया।

इलाहाबाद—महाकुंभ के अवसर पर आयोजित जीवन-दर्शन आध्यात्मिक मेले का भव्य दृश्य।

प्रश्नोत्तर

"जीवन पहले ही छोटा है, इसे तनाव से और छोटा न करो"

ब्र० कु० सूर्य, माऊण्ट आबू

प्रश्न – लौकिक सम्बन्धों में सदा ही तनाव रहता है। हम इस तनाव से मुक्ति चाहते हैं। हम जानना चाहते हैं कि इन लौकिक सम्बन्धों को अलौकिक कैसे बनायें?

उत्तर – वर्तमान कलियुगी विश्व तनाव-प्रधान है। यहाँ प्राय: सभी मनुष्य तनावग्रस्त हैं। सूक्ष्म दृष्टि से कहा जा सकता है कि इस तनाव का जन्म-दाता मनुष्य स्वयं ही है। उसने अपने जीवन में ऐसे काँटे बोये हैं जो चुभ-चुभ कर अब उसे ही लहूलुहान कर रहे हैं।

इनमें सबसे बड़े काँटें हैं काम और क्रोध के। कामी व्यक्ति का मन इतना कमज़ोर होता है कि वह साहसपूर्वक समस्या का सामना नहीं कर सकता। क्रोधी स्वाभाव उसे हर समय तनाव में रखता है। तो चाहे पारिवारिक सम्बन्ध हों, चाहे व्यवसायिक – समस्याएं तो हैं ही और इनसे लड़ने के लिए चाहिए आत्म-बल।

यदि राजयोग से आप आत्म-बल एकत्रित करते हैं तो आपको देखना है कि विभिन्न छिद्रों से वह बल बह कर नष्ट तो नहीं हो जाता। उन छिद्रों को बन्द करना होगा। उनमें भी मुख्य छिद्र हैं व्यर्थ संकल्पों के व अहंभाव के।

लौकिक में सम्बन्ध बिगड़ने के कुछ कारण हैं। प्रथम – दूसरों पर अधिकार की भावना, दूसरा – दूसरों से कुछ कामनाएँ, तीसरा – सम्पत्ति का लोभ और चौथा – अपनी जिम्मेदारियों को ठीक तरह से न निभाना।

व्यक्ति समझता है कि उसका अपनी पत्नी व बच्चों पर पूरा अधिकार है क्योंकि वह उनके लिए धन कमाता है। यह अधिकार की भावना उसे निरन्तर परेशान करती है। अधिकार के कारण वह उन्हें अपने अधीन रखना चाहता है जबकि अधीन रहना किसी भी आत्मा का मूल स्वभाव नहीं है। इसके परिणाम विस्फोटक होते हैं तथा तनाव बढ़ जाता है।

जिस माँ-बाप ने अनेक कष्ट सहकर बच्चों की पालना की, उन्हें योग्य बनाया; उनसे माँ-बाप को कुछ कामना रहती है। या आपने किसी को समय पर मदद की, उसका भला किया या किसी पर उपकार किया और आप या कोई भी माँ - बाप देखते हैं कि बच्चे अनादर करते हैं या ज़रा भी एहसान नहीं मानते तो वे परेशान हो जाते हैं।

सम्पत्ति के बंटवारे में लोभ-वृत्ति घर-घर में कलह का कारण है। मनुष्य सम्बन्धों से ज्यादा सम्पत्ति को महत्व देता है। इस कारण जहाँ आज तक स्नेह व अपनेपन का भाव था वहाँ इतनी दुश्मनी हो जाती है कि सगे भाई भी आपस में एक दूसरे को देखना भी नहीं चाहते।

कहीं कहीं माँ-बाप अपने बच्चों के प्रति व बच्चे माँ-बाप के प्रति, मालिक अपने कर्मचारियों के प्रति व कर्मचारी अपने कर्त्तव्यों के प्रति जिम्मेदारी नहीं निभाते। इस तरह विभिन्न सम्बन्धों में जब मनुष्य ठीक तरह से अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता तो परस्पर तनाव बढ़ता है।

तो जिनके पास ज्ञान का अविनाशी भण्डार है, उन्हें दूसरों पर से अपनी अधिकार की भावना को समाप्त कर देना चाहिए। सभी पर परमात्मा का अधिकार है, सबका अपना-अपना भाग्य है, सबकी अपनी-अपनी बुद्धि है – यह जानकर साक्षी भाव अपनाना चाहिये। हाँ, इन्हें मार्गदर्शन की यदि आवश्यकता हो तो नम्र भाव से अवश्य ही देनी चाहिए।

कामनाओं से हम कमजोर न बनें। इसके लिए सोचना चाहिए कि हमने दूसरों का भला किया – यह हमारा कर्त्तव्य था, हमारा पुण्य जमा हुआ। भला किया और भूल जाओ। बदले में कुछ कामना रखना, परोपकार के महत्व को समाप्त कर देना है। अत: निष्काम भाव से अपने कर्त्तव्यों का पालन करें।

सम्पत्ति आदि के बँटवारे के बारे में हमें त्याग-वृत्ति अपनानी चाहिए। योगियों को 'स्वयं भगवान्' सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति के रूप में मिला है। सबका भाग्य उनके साथ है। कोई भी यहाँ भूखा नहीं रहेगा।

प्राय: देखने में आता है कि कई मनुष्य अपने बच्चों व पोत्रों के लिए धन एकत्रित करने में अर्थात् उनका भविष्य सुधारने में अपने भविष्य को नर्कमय बना देते हैं। वे सोचते हैं कि हम इतना धन कमाएँ जो कई पीढ़ियाँ खाती रहें, गोया वे समझते हैं कि उनकी भावी पीढ़ियाँ निकम्मी ही रहेंगी! और इस प्रकार वे खाली ही रह जाते हैं। तो खाली मन में तनाव नहीं भरेगा तो क्या होगा?

इस प्रकार हमें साक्षी भाव के साथ अपने कर्त्तव्यों को भी पूर्ण करना चाहिए। कार्य को अधूरा छोड़ने पर भी तनाव बढ़ता है। इस प्रकार यदि हम स्वयं हल्के होंगे तो हमारे सम्बन्धों में भी हल्कापन रहेगा।

प्रश्न – मैं एक बड़ी फैक्टरी में महाप्रबन्धक के पद पर हूँ। आजकल कर्मचारी लोग जिम्मेदारी से काम नहीं

करते जिसके कारण मुझे तनाव रहता है। मेरा स्वभाव भी काफी चिड़चिड़ा रहता है। दूसरे लोग भी मुझसे परेशान हैं। मैं शान्ति का मार्ग चाहता हूँ ताकि कम से कम नींद का सुख तो ले सकूँ। कोई रास्ता बताएँ।

उत्तर – आपकी उपस्थिति दूसरों के मन में अवश्य ही तनाव पैदा करती होगी। आपको याद रखना होगा – जिस व्यक्ति की उपस्थिति ही दूसरों को तनावग्रस्त कर देती है वह स्वयं तनावमुक्त कैसे रह सकता है? अवश्य ही आपका व्यवहार, आपका दृष्टिकोण व काम करने व कराने का तरीका त्रुटिपूर्ण है।

क्योंकि मनोविज्ञान का यह सत्य सिद्धान्त आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यदि कोई व्यक्ति परेशान है, विचलित है तो उसका जिम्मेदार वह स्वयं ही है। परन्तु यह 'सत्य' महसूस न करने कारण अपनी कमजोरी का दोष मनुष्य दूसरों के सिर पर मढ़ना चाहता है और इसलिए सोच-सोच कर मनुष्य ज्यादा परेशान होता है।

लगता है आपका स्वभाव (Nature) काफी नाजुक (Sensitive) हो चुका है और आप बचपन से ही काफी भावुक (Emotional) रहे होंगे। अधिक भावुकता क्रोध को तथा क्रोध तनाव को जन्म देता है। यह स्वभाव आपको बदलना पड़ेगा। "स्वभाव हल्का और मन शक्तिशाली हो"। यह है कार्य को खेल के समान हल्का बनाने का महामन्त्र।

इसमें आपको मदद करेगा 'राजयोग'। इससे एक तो आपके दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा, दूसरे आपके मन की शक्तियाँ बढ़ेंगी और क्रोध एवं चिड़चिड़ेपन पर विजय मिलेगी। आपका दृष्टिकोण भी विशाल होता जायेगा। जहाँ करोड़ों का करोबार चल रहा है, वहाँ हजार दो हजार का नुक्सान नगण्य है। इस तुच्छ बात पर भी स्वयं को तनाव में लाना बुद्धिमानी नहीं है।

मुझे ऐसा लगता है कि आप बचपन से ही ईमानदार, कर्मठ व सत्यवादी रहे होंगे क्योंकि ऐसी महान् प्रकृति के व्यक्ति प्रायः दूसरों से भी वैसा ही करने की कामना रखते हैं, जबकि कलियुग में यह असम्भव है। जैसे हम हैं, वैसे ही दूसरे हों, वे भी ऐसा ही क्यों नहीं करते – यह भावना तनाव को जन्म देती है। जरा सोचो, यदि वे भी आप जैसे ही होते तो क्या वे भी आज महाप्रबन्धक न होते? इसलिए आपको यह याद रखना होगा कि इस विश्व में सभी की कार्यक्षमता, विचार, दृष्टिकोण, बुद्धि व शारीरिक बल अलग-अलग हैं। सभी व्यक्ति सच्चे, ईमानदार व कर्मठ नहीं होते। हाँ, आप उन्हें प्रोत्साहित करते रहें, उन्हें कुछ सिखाते रहें। परन्तु यदि दूसरों के कारण तनावग्रस्त होकर आपको नींद का सुख भी नहीं मिलता, तो यह आपकी अपनी ही गलती है।

आपका तनाव उन्हें और ही निष्कर्मण्य बना रहा है। आपका स्नेह, सम्मानित व्यवहार व शुभ दृष्टिकोण ही उन्हें कर्त्तव्य के प्रति समर्पणता सिखा सकता है। प्रायः मनुष्य कभी भी यह नहीं सोचता कि दूसरे की समस्या क्या है, वह किन परिस्थितियों में है और वह हमसे क्या चाहता है? हम जरा भी दूसरों की भावनाओं को न समझकर केवल अपनी ही कामनाओं को महत्व देते हैं। फलस्वरूप अपने व दूसरों के मन में तनाव पैदा कर देते हैं। तो पहले हम दूसरों की परिस्थितियों को समझकर उन्हें हल्का करें, फिर अपनी बात कहें। ऐसा करने से उसे अपनापन महसूस होगा व सच्चे दिल से वह हमारा सहयोगी बनेगा।

अन्त में, आपके लिए यह परामर्श है कि आप राजयोगी बनकर कार्य को खेल की तरह मनोरंजक रीति से करना सीखें और जब कार्य समाप्त करके घर आते हैं तो कार्य का बोझ साथ न लायें। घर आकर घर के वातावरण का आनन्द लें, उसे बोझिल न बनायें। रात्रि देर तक कार्य न करें, टी० वी० देखकर न सोयें बल्कि ईश्वरीय महावाक्यों का अध्ययन करके उन्हीं विचारों में सोयें तो सुख की नींद का आनन्द आप पा सकेंगे।

प्रश्न – आप जानते हैं कि आजकल लोग क्रोध के बिना काम नहीं करते। फलस्वरूप मुझे क्रोध आता है और इससे तनाव व अशान्ति बढ़ती है, मन बड़ी ही आत्म- ग्लानि महसूस करता है। क्या करें?

उत्तर – यह सत्य है कि कलियुग के इस अन्तिम चरण में अधिकतर लोग इतने अकर्मठ व बेवफा हो गये हैं कि वे दिल लगाकर काम नहीं करते। क्रोध व भय दिलाकर ही उनसे काम लिया जाता है।

परन्तु यह मत भूलो कि क्रोध से काम बिगड़ता है, काम बनता नहीं। इससे दूसरे मनुष्य के मन में भी आक्रोश बढ़ता है। अतः क्रोध से अपना व दूसरे का मन बिगाड़ कर कार्य सुधारा नहीं जा सकता। क्रोध से कहीं बड़ी शक्ति है स्नेह की। इस अमोघ शस्त्र से विश्व पर राज्य किया जा सकता है और यह शक्ति बढ़ती है राजयोग से। परन्तु यदि हमारा मन स्नेह व शुभ-भावनाओं से नहीं भरा हुआ है, यदि आप उन्हें नौकर समझते हैं तो कार्य कठिन होगा। अतः पहले 'क्रोध' को प्रशासन का व आत्मा का महावैरी समझ कर ज्ञान-शस्त्र से भेदने का पुरुषार्थ करो।

जरा अपनी क्रोध करने की आदत पर भी ध्यान दें। कहीं ऐसा तो नहीं कि क्रोध आपका स्वभाव बन गया है

अथवा कहीं क्रोध आपके घर व कार्यक्षेत्र में आतंक का माहौल तो नहीं बना देता? यदि ऐसा है तो आपको क्रोध पर विजय पाने का दृढ़ संकल्प करना होगा। रोज़ प्रातः आँख खुलते ही यह संकल्प करो कि मैं एक आत्मा हूँ, मेरा स्वधर्म शान्ति है, मैं केवल निमित्त हूँ, मालिक तो ऊपर वाला मालिक है। इस प्रकार अशरीरीपन के अभ्यास से मन शान्त होता जाएगा, धैर्यता की वृद्धि होगी और आपकी कार्यक्षमता व प्रशासनिक शक्ति बढ़ जाएगी। फलस्वरूप आप तनावमुक्त व क्रोधमुक्त रहकर ही दूसरों से कार्य कराने में सक्षम होंगे।

प्रश्न – मैं एक कुमार हूँ। ईश्वरीय सेवाओं में मेरा भी विशेष पार्ट रहता है। परन्तु मेरे सम्बन्ध सभी से बिगड़ गये हैं। फलस्वरूप मन में बहुत तनाव रहता है, योग में भी नींद आती है। मैं क्या करूँ?

उत्तर – दूसरों की सेवा अर्थात् दूसरों को सुख देने की भावना यदि स्वयं को परेशान कर दे तो इसे क्या कहेंगे? हमने ठीक ढंग से सेवा करना नहीं सीखा है। जो व्यक्ति स्वयं ही तनावग्रस्त रहता है, वह भला सेवाओं में कैसे सफलता पायेगा?

आप एक गलती कर रहे हैं – 'केवल सेवा ही सेवा'। योग और मुरली के आनन्द को आपने ताक (किनारे) पर रख दिया है। इसलिए आपकी सेवा अलौकिक न बनकर लौकिक जैसी हो गई है। और क्योंकि आत्मा ईश्वरीय सुख से वंचित है, इसलिए वह 'मान-शान' का सुख पाने का प्रयास करती है और यहीं से जन्म होता है 'तनाव' का।

इसलिए अब रोज अमृतवेले उठकर योग का सुख अनुभव करना आरम्भ करें। प्रातः 6.00 बजे उठना और फिर जीवन में अलौकिकता की इच्छा रखना असम्भव है। अमृतवेले एक बार तो मन को प्रसन्न कर दो और नियमित रूप से मुरली सुनने आश्रम पर जाओ। देर से सोना, चाहे सेवा के कारण ही हो, व देर से उठना – यह तनाव को बढ़ावा देना है क्योंकि इससे बुद्धि की शक्तियां मंद पड़ती हैं।

सेवाओं में तनाव का एक और भी कारण है। वह है 'मैं-पन'। इस द्वार से माया तनाव के रूप में सहज ही प्रवेश करती है। आप जानते हैं – अब भगवान् स्वयं ही संसार को बदलने का कार्य कर रहा है। उसने हमें निमित्त बनाया है। यह हमारा परम सौभाग्य है। तो हम अपने को 'निमित्त' ही समझें। स्वयं को 'मालिक' समझने की गलती करके ही हम तनाव को जन्म देते हैं। ईश्वरीय महावाक्य भी हैं – "बाप, जो कि मालिक है, वह तो सदा स्वयं को निमित्त समझकर हल्का रहते हैं और कई बच्चे, जो कि निमित्त हैं, स्वयं को मालिक समझकर सदा चिन्ताओं में रहते हैं।"

तो इस तरह हल्के हो जाओ तो योग में नींद भी नहीं आयेगी। साथ-साथ चारों ही विषयों में सन्तुलन रखने का भी ध्यान रखें।

प्रश्न – मैं आपसी सम्बन्धों में तनाव के कारण अनेक बार बहुत परेशान हो उठती हूँ और सोचती हूँ कि इस जीवन का अन्त कर दूँ। यह संकल्प मुझे कई बार आता है। मैं इसका प्रतिकार कैसे करूँ?

उत्तर – मानव जीवन मनुष्य के लिए अमूल्य निधि है और इसमें भी अगर भगवान् मिल जाएं तो यह जीवन स्वर्ग के हजारों जन्मों से भी अधिक मूल्यवान है। कितना अच्छा हो कि आप स्वयं के महत्व को जान लें और ईश्वरीय मिलन के आनन्द के द्वारा सम्पूर्ण तनाव को नष्ट कर दें।

यदि आप राजयोग का सुन्दर अभ्यास करें तो..... आप अनेक मनुष्यों को नवजीवन दे सकेंगी, आप अनेकों के श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करा सकेंगी, अनेकों का सम्बन्ध भगवान् से जोड़ सकेंगी..... जरा एकाग्र मन से अपने जीवन के मूल्य पर चिन्तन करो – ये जीवन पहले ही छोटा है, इसे इस प्रकार के तनाव से और छोटा न करो।

हो सकता है लोग आपसे अपेक्षित व्यवहार न करते हों, हो सकता है वे आप पर दोषारोपण करते हों, हो सकता है वे आपको पीछे हटाना चाहते हों और इसलिये आपके मार्ग में काँटे बोते हों। परन्तु इन सबका हल जीवन का अन्त कर देना तो नहीं है ना! आप इन सम्बन्धों को हल्का कर दो, स्वयं के विचारों को हल्का कर दो और दूसरों से कुछ भी कामनायें न रखो। एक बार स्वयं को चारों ओर से समेट कर अन्तर्मुखी बनो।

जरा धैर्यवत् होकर विचार करो – लोग आपसे ऐसा क्यों करते हैं? कहीं आपने ही तो इसका बीज नहीं बोया था? यदि नहीं तो आप भारी न हों और यदि हाँ, तो फल को स्वीकार कर लो और स्वयं को बदल लो। बातों को बढ़ाओ नहीं, तो अन्य सब बातें भी स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी।

तनाव तो संसार में घर-घर में राज्य कर रहा है। परन्तु अब उस पर आपको राज्य करना है। परन्तु कैसे? राजयोग के बल से..... आत्म-विश्वास के बल से..... निराशा को त्याग कर और विजय का झण्डा हाथ में लेकर.....

यह बात आपके ध्यान में रहे कि जीवन का अन्त करना इतना सरल काम नहीं है। यदि किसी को सरल लगता भी हो तो इससे कई जन्म अन्धकारमय हो जाते हैं। जीवघात करने पर या तो आत्मा को शरीर मिलता ही नहीं या उसे भूत-प्रेत आदि योनियों में भयंकर कष्ट भोगने पड़ते हैं और फिर बहुत ही निकृष्ट जन्म मिलता है। क्योंकि जीवघात के समय जो अत्यन्त पीड़ा और बहुत भय

आत्मा को होता है, वह मानो युगों के समान पीड़ा अनुभव कराता है। इसलिए इस घृणित कर्म को करने का संकल्प आप त्याग दें। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जिस मनुष्य को परिस्थितियों में बार-बार जीवघात करने का संकल्प आता है, एक दिन उसका अन्त इसी तरह होता है। इसलिए यदि आप इस भयावह मौत से बचना चाहती हैं तो इस संकल्प को सदा के लिए त्याग दें।

क्या आप नहीं सोचती, इस कम से कितनी बदनामी होती है उस समाज की जिससे आप जुड़ी हैं, आपके प्रियजनों पर क्या बीतेगी? यदि आपके मन में उस समाज के प्रति रोष भरा है जिसने आपको सताया है, दबाया है और इस तरह आप उनसे बदला लेना चाहती हैं तो यह भी ठीक नहीं। यदि आप समाज को कुछ सिखाना ही चाहती हैं तो मर कर नहीं, श्रेष्ठ जीवन बनाकर सिखाओ।

अन्त में हम यही कहेंगे कि इस घृणित व दुःखदायी संकल्प का सदा के लिए त्याग करके अपने जीवन को प्रभु के हवाले कर दो। वह सब कुछ ठीक कर देगा और अपने जीवन को इतना शक्तिशाली बना लो जो वह अनेक नर-नारियों के लिए प्रेरणा हो और आपके दर्शनीयमूर्त्त को देखकर ऐसे ही संकल्प रखने वाले अनेक मनुष्य, जीवन का सच्चा सुख पा सकें। ■

माउण्ट आबू–'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने पर डा० एन० खिलानी को सांत्वना पुरस्कार देते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

माउण्ट आबू–'विज्ञान और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने पर भ्राता मदनमोहन, आई०आई०टी०, बैंगलोर को सांत्वना पुरस्कार देती हुई दादी प्रकाशमणि जी।

फर्रुखाबाद–अन्तर्राष्ट्रीय ध्यान संस्थान के प्रतिष्ठाता 'स्वामी श्याम' को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् ब्र० कु० मंजू बहन तथा अन्य उनके साथ बैठे हुए।

पूना में 'पिता श्री' ब्रह्मा बाबा के २०वें स्मृति-दिवस पर आयोजित समारोह का उद्घाटन दृश्य।

होली उत्सव पर

विकर्मों की होलिका जलाकर होली बनो !

कहा जाता है कि प्रभु विमुख हिरणाकश्यप की बहन होलिका, भक्त प्रहलाद को जलाने के उद्देश्य से गोद में लेकर होली में बैठी थी। परन्तु होलिका जल गयी और प्रभु-प्रिय प्रहलाद सुरक्षित बच गया। वास्तव में सृष्टि के परिवर्तन अर्थात् महाविनाश के समय आसुरी प्रवृतियों के सूचक होलिका तथा हिरणाकश्यप नष्ट हो जाते हैं तथा दैवी प्रवृतियों का प्रतीक भक्त प्रहलाद सुरक्षित बच जाता है और एक नये दैवी युग का सूत्रपात प्रारम्भ हो जाता है जिसे सतयुग कहते हैं।

स्वांग बनाना

होली में देवताओं के स्वांग बनाते हैं तथा उनके मस्तक पर ज्योति जलाते हैं। वास्तव में जब ज्ञान द्वारा मनुष्य आत्माओं की आत्मिक ज्योति जग जाती है तो वे मानव से देवता बन जाते हैं। होली पर लोग अबीर-गुलाल से एक दूसरे के माथे पर तिलक लगाते हैं, यह तिलक भी आत्म-स्मृति की निशानी है।

गले मिलना और गीत गाना

होली के दिन सभी लोग आपस में गले मिलते तथा वैमनस्य को भुलाकर अर्थात् बीती को बिसार कर, आपस में गले मिलते तथा खुशियों के गीत गाते हैं। वास्तव में आत्मा जब अपने अन्तर्मन में छिपे विकर्मों को योग अग्नि में दग्ध कर देती तो उसके अन्दर भ्रातृत्व भाव, स्नेह और सहयोग की भावना पैदा हो जाती है। संसार में विश्व-बन्धुत्व का स्वरूप साकार हो उठता तथा लोग खुशियों में मस्त होकर एक ईश्वर के गुण गाने लगते और पुरानी बातों को भूल जाते हैं।

खुशियाँ मनाना

वास्तव में आत्मायें जब पवित्र बन जाती हैं तो वे संगमयुग पर परमपिता परमात्मा से श्वासों-श्वास मिलन मनाकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती तथा भविष्य में देव पद प्राप्त कर खुशियों का जीवन व्यतीत करती हैं।

पिचकारी चलाना

होली पर लोग एक दूसरे पर पिचकारी द्वारा रंग डालते हैं। पिचकारी में भी कई धारायें निकलती हैं। वास्तव में आध्यात्म रूपी अलौकिक पिचकारी से आत्माओं पर पड़ने वाला ज्ञान रंग अनेक प्रभाव डालता है। जैसे :–

१. **ज्ञान की धारा**–आध्यात्म से ही सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान, कर्मों की गहन गति का ज्ञान, विश्व के इतिहास, भूगोल तथा आत्मा-परमात्मा से सम्बन्धित दिव्य ज्ञान की धारा प्राप्त होती है।

२. **खुशियों की धारा**–मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं विश्व का मालिक हूँ, मैं भगवान् की डायरेक्ट संतान हूँ, मैं हीरो पार्टधारी हूँ आदि–अनेक खुशियां एक धारा के रूप में आत्मा को खुशी प्रदान करती हैं।

३. **सर्वप्राप्तियों की धारा**–अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति, आत्मा परमात्मा के मिलन में रूहानी स्नेह की प्राप्ति तथा परमात्मा के साथ सर्वसम्बन्धों से सर्वप्राप्तियां होती हैं।

गायन है कि गोपीबल्लभ ने गोप-गोपियों के साथ होली खेली थी। वास्तव में गोपीबल्लभ परमपिता परमात्मा शिव ने आत्माओं रूपी गोप गोपियों के साथ (संगमयुग पर) ज्ञान रंग की होली खेल कर हमें होली (Holy पवित्र) आत्मा अर्थात् देवता बनाया था। इसी महान् कर्त्तव्य की यादगार में होली का त्यौहार मनाया जाता है।

आइए, हम सभी वास्तविक रूप में गोप-गोपी बन गोपीबल्लभ ज्ञान सागर परमात्मा शिव के साथ ज्ञान-रंग की होली खेलकर, बीती बातों को 'हो ली' (बिसार) कर, प्रभु के बन कर, अपने विकर्मों की होलिका जलाकर, होली (पावन) बनकर होली (पावन) दुनिया के निर्माण में अपने सहयोग की अंगुली देने का संकल्प लें और इस त्यौहार को सार्थक बनायें।

ब्र०कु० रामबहादुर सिंह कानपुर

जलगांव– 'पिता श्री' ब्रह्मा बाबा के २०वें स्मृति-दिवस पर आयोजित समारोह में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० मीनाक्षी बहन।

महाशिवरात्रि – 'शिव' का अवतरणोत्सव

ब्रह्माकुमारी आरती, बीकानेर

समस्त भारतवर्ष में 'महाशिव-रात्रि' का त्यौहार बहुत ही श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है, परन्तु परम्परागत विधिपूर्वक उत्सव मनाते भी प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह जानने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि आखिर इस उत्सव के पीछे क्या रहस्य छिपा है?

हम महाशिवरात्रि के अवसर पर पूजा तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता निराकार ज्योतिबिन्दु त्रिमूर्ति परमात्मा शिव की करते हैं परन्तु भजन-कीर्तन आकारी देव महादेव शंकर जी के गाते हैं। सर्वप्रथम यही 'एकज़ भूल' है कि हम निराकार ज्योति स्वरूप परमपिता 'शिव' को एवं आकारी देवता 'शंकर जी' को एक मान लेते हैं।

त्रिमूर्ति शिव परमात्मा सर्व के पिता, विश्व कल्याणकारी, सर्व देवों के भी रचता परमधाम निवासी हैं यद्यपि शंकर जी आकारी देवता, कलियुग सृष्टि के संहारी, सूक्ष्मवतनवासी परमात्मा शिव की रचना है।

भारत में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ है और सभी की जयन्तियाँ समय प्रति समय मनाई जाती हैं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी, श्री राम नवमी, बुद्ध जयन्ति, गांधी जयन्ति, नेहरू जयन्ति इत्यादि अनेक महापुरुषों की जयन्ति हम मनाते हैं और प्रत्येक की जयन्ति पर सम्बन्धित महानुभाव के जीवन चरित्रों पर प्रकाश डाला जाता है। किन्तु आश्चर्य है कि समस्त भारतवर्ष में मनाई जाने वाली महाशिवरात्रि के वास्तविक रहस्य को आज कोई भी नहीं जानता।

शिवरात्रि वास्तव में परमात्मा शिव के अवतरण का ही यादगार है जो कि घोर कलियुगी अज्ञान अन्धकारमयी रात्रि में अवतरित होकर सत्य ज्ञान का प्रकाश देते हैं एवं हमें सर्व मनोविकारों से मुक्त कर सदा सुख-शान्ति एवं सम्पत्ति का अधिकारी बनाते हैं।

परमपिता शिव हम विषय-विकारों से भरी हुई आत्माओं रूपी विषैले पुष्पों को अपना बनाकर फिर से दिव्य गुणों की खुशबू से भरपूर करते हैं। अतः यादगार स्वरूप में आक एवं धतूरे के फूल हम शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। दूध एवं पानी मिला कर शिव पर लोटी भी चढ़ाते हैं क्योंकि परमात्मा के अवतरण के समय इस धरा पर पवित्रता केवल नाम मात्र ही रह जाती है, अतः थोड़ी पवित्रता का प्रतीक थोड़ा दूध, अपवित्रता के प्रतीक अधिक पानी में मिलाकर शिवलिंग पर अर्पित करते हैं।

परमपिता परमात्मा शिव आकर हमें मनोविकारों के त्याग का प्रण दिलाते हैं एवं आत्मा की वास्तविक स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास कराते हैं जिसकी यादगार स्वरूप हम उपवास अथवा व्रत रखते हैं।

जागरण आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक है। परमात्मा शिव हम बच्चों के जीवन को दिव्य अथवा कीर्ति योग्य बनाते हैं, यादगार में हम भगवान् का कीर्त्तन करते हैं।

उपरोक्त रहस्यात्मक रस्मों के अलावा एक बहुत ही दिलचस्प रस्म शिवरात्रि से संबंधित है। वो है आज के दिन भांग (एक प्रकार का नशीला पदार्थ) पीने और प्रसाद रूप में सब भक्तों को पिलाने की रस्म। कितनी अजीब है यह रस्म! एक तरफ तो किसी भी नशीली वस्तु के सेवन को अवैध माना जाता है और दूसरी तरफ भक्ति की आड़ में खुलेआम भाँग का सेवन किया एवं कराया जाता है। इसके लिए लोग हवाला देते हैं कि शंकर जी भी भाँग पीते थे। अगर यही मान लिया जाए तो फिर भाँग का सेवन अवैध क्यों?

हाँ, वो नशा तो अतीन्द्रिय सुख है, प्रभु-मिलन की खुशी का है। कहा जाता है—नशे सब संसार दे उतर जान प्रभात, नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन-रात। तो यह है वो खुमारी जिसे नारायणी नशा या मौलाई मस्ती भी कहा जाता है। यही है प्रभु-मिलन के दिव्य अनुभव का प्रभु प्रसाद जो योगी औरों को भी बाँटता है, न कि भाँग का नशा।

अब पुनः प्रभु-अवतरण का अमूल्य समय चल रहा है। वर्तमान घोर कलियुग अन्त की वेला में हम सभी के परमप्रिय परमात्मा शिव अवतरित होकर विश्व परिवर्तन का ईश्वरीय कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के माध्यम से गुप्त रूप में कर रहे हैं।

तो आइये, ६ मार्च १९८९ को ५२वीं महाशिवरात्रि के शुभ दिन पर हम सभी अपने परमप्रिय परमपिता को यथार्थ रूप में पहचान कर उनकी दी हुई शिक्षाओं का पालन करके विश्व कल्याण के कार्य में सहयोगी बनें और हम सभी प्रण करें कि हम एक हैं, एक के हैं और एक होकर के विश्व-कल्याण एवं विश्वशान्ति के कार्य को सम्पन्न कर सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार बन कर ही दिखाएंगे। ■

सहयोग दो, सहयोग लो

जग परिवर्तन की वेला में, सद्भाव मिलन की मेला में
सहयोग दो सहयोग लो, सहयोग दो सहयोग लो

इस बात से है इन्कार नहीं रातों में सुबह की लाली है,
पर भाग्य बनाने की ये घड़ी फिर लौट न आने वाली है
सबका सौभाग्य बनाने में, जग-अंधियार मिटाने में
सहयोग दो सहयोग लो ·····

सहयोग की है ये हरित-क्रान्ति जीवन खुशहाल बनाने की
अपने भाई-बहनों द्वारा अपना घर स्वर्ग बनाने की।
सबका दुःख-दर्द मिटाने में, सुखमय संसार बनाने में
सहयोग दो, सहयोग लो ·····

ब्र०कु० सतीश कुमार, माउण्ट आबू

उदयपुर—'पिता श्री' ब्रह्मा बाबा के २०वें स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाता बंसी लाल गुप्ता, सत्र न्यायाधीश अपने उद्गार प्रगट करते हुए।

नवसारी में आयोजित एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाता ए०डी० पटेल, मुख्य अधिकारी, महानगरपालिका नवसारी को प्रसाद देते हुए ब्र० कु० डा० निर्मला बहन।

सांगली—'पिता श्री' ब्रह्मा बाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अपने उद्गार प्रगट करते हुए भाता बिपीन चन्द्र शहा जी।

मेहसाना— 'पिता श्री' प्रजापिता ब्रह्मा के २०वें स्मृति-दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० सुरेखा बहन।

कविता

सुखमय संसार की एक झलक

ब्र०कु० भगवान भाई, माउण्ट आबू

कितना सुन्दर, कितना प्यारा वो विश्व हमारा
नभ-जल-थल में कहीं नहीं बंटवारा
कितना सुन्दर, कितना प्यारा ·····
सतरंगी सूरज की किरणें, चमकाती हर आनन को
स्वच्छ चांदनी भर-२ मोती दमकाती घर आंगन को।
झिलमिल तारे, रिमझिम फव्वारे, मौसम सावन प्यारा
कितना सुन्दर, कितना प्यारा ·····
रग-बिरंगे पुष्प बाग-वन मखमल-सी धरनी होगी
पीत-वसन परिधान पहन वो देवी-सी रमणी होगी
सांझ सकारे, झूमें हिलमिल सारे—हो वो परिवार हमारा
कितना सुन्दर, कितना प्यारा ·····
कितना ही अच्छा होगा जहाँ प्रेम छलकता हर मन में
सत्य ज्ञान-विज्ञान-समंगल नशा निराला जन-जन में
मन की पुकार वो होगा संसार जिसे मन में हमने संवारा
कितना सुन्दर, कितना प्यारा ·····

'शरीर' और 'आत्मा' दोनों को सम्पन्न बनाने वाली शिक्षा की रूपरेखा

डॉ० हरीश शुक्त, पाटन

सन्, ८२ से आज तक के सभी शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में आध्यात्मिकता की अनिवार्यता स्वीकार की है। गांधी जी ने भी शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। कवीन्द्र रवीन्द्र और राधाकृष्णन् जी ने भी यही घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियां विनाश का कारण बनेंगी। आज इसकी प्रत्यक्षता और यथार्थता साकार रूप ले रही है।

शिक्षा का उद्देश्य ही है—ऊँचे चरित्र का निर्माण। क्या आज इस उद्देश्य की पूर्ति कहीं नज़र आ रही है? यदि नहीं तो क्यों? शिक्षा सर्वांगपूर्ण हो जिसमें मन, बुद्धि, चरित्र और देह सभी के विकास का अवसर हो, तथा सुखमय संसार निर्माण में सहयोगी हो उसके लिए कुछ बातों का विवेचन यहां कर रहा हूँ।

प्रथम तो शिक्षा का केन्द्र है 'प्रेम'। प्रत्येक आत्मा के लिए आवश्यक चीज स्नेह है। स्नेह नहीं तो जीवन नीरस है। स्नेह इतनी ऊँची वस्तु है जो आज के साधारण लोग स्नेह को ही भगवान् मानते हैं। प्यार ही परमात्मा है वा परमात्मा ही प्यार है। क्या शिक्षाविद् इस स्नेह जल से अपनी शिक्षा की फुलवारी को सींच रहे हैं? हम जो देंगे वही तो हमें मिलेगा? इस प्रयोग से मुरझाती बगिया को बचाने की जवाबदारी हमारी है।

स्नेह पैदा होता है परमात्म—स्नेह की ज्योति जलाने से। ऐसी प्रेमपूर्ण शिक्षा से ही एक पूर्णता और आनंद का अनुभव होता है। आज का युवा-शिक्षार्थी प्रेम का भूखा है। ऐसी प्रेमपूर्ण शिक्षा ही सम्यक शिक्षा है जिसमें दूसरों के साथ संघर्ष नहीं वरन् स्वयं की आत्मा का जागरण है। ऐसी शिक्षा से कामों और चीजों के साथ जो पद-प्रतिष्ठा है, वह समाप्त हो जाती है। परमशिक्षक परमात्मा हमें ऐसा ही कर्मयोगी शिक्षक बनाता है। यही शिक्षक का प्रमाणपत्र है। दूसरों को पढ़ाना माना उसे रोग-शोक से छुड़ाना—"सा विद्या या विमुक्तये" का सूत्र इसी अर्थ में है।

प्रेम, शांति, संतुष्टता, उमंग और निर्भयता के वातावरण में ही हमारी सार्वत्रिक सफलता समाई है, जिसका मूल केन्द्र प्रेम है, जहां प्रेम है वहां त्याग है, सहनशीलता है, निर्भयता है। ऐसी निर्भयता जो कर्म के प्रति निष्ठा और परिणाम के प्रति निश्चिंतता पैदा करती है।

शिक्षा क्षेत्र में प्रश्न यहीं है कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को व्यावहारिक रूप कैसे दिया जाय? हमारी धर्म निरपेक्ष नीति भी इसके लिए बहुत कुछ जवाबदार है। धार्मिक शिक्षा के लिए पहली शर्त धर्म की सम्प्रदायों से मुक्ति आवश्यक है। जो धर्म मानव को मानव से तोड़ दे, वह परमात्मा से कैसे जोड़ सकता है? धर्म अनेक नहीं—एक हैं। और वह है धारणा अर्थात् जीवन रूपांतरण। सत्य, अहिंसा, पवित्रता, धैर्यता, सहनशीलता आदि दिव्य गुणों की धारणा के लिए किसी विशेष धर्म की दीक्षा की आवश्यकता नहीं। हाँ, निश्चयात्मक ज्ञान की आवश्यकता है, जिसके सूत्र ये हैं:—

१. शरीर एवं आत्मा की भिन्नता
२. आत्मा का सच्चा पिता परमात्मा
३. सृष्टि एक नाटक है
४. स्व स्वरूप का ज्ञान कराने का एकमात्र साधन सहज 'राजयोग' है

आध्यात्मक अभिमुखी शिक्षा का केन्द्र यह हो और बच्चों को सिखाया जाए कि तुम मानव हो, एक चेतन आत्मा हो, हिन्दू-मुसलमान वा सिख नहीं। तो एक नया देश, नया विश्व पैदा होगा। ऐसी शिक्षा से ऐसे स्वस्थ मानव पैदा होंगे जो न हिन्दू हैं, न मुसलमान, न जैन, न सिक्ख बल्कि वे मात्र धार्मिक, प्रशांत, एक परमात्मा की अमर संतान होंगे और विश्व मानव के साथ आपस में भ्रातृत्व की विशुद्ध प्रेम भावना से जुड़े होंगे।

इस प्रकार की शिक्षा से एक सहज सफूर्त्त विवेक पैदा होता है जिसके प्रकाश में प्रथम तो कर्म स्वयं ही महान् बन जाता है, भले ही वह छोटा हो। दूसरा कर्त्तव्य और अधिकार के प्रति सम-भावना का उदय होता है, जिससे उसे स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि कर्त्तव्य और अधिकार का संतुलन ही सफलता है, संपन्नता है। सरलता और समानता की व्याख्या भी बदल जाती है।

वास्तव में शरीर तथा शरीर की कर्मेन्द्रियों की मालिक चैतन्य शक्ति आत्मा दोनों की संपन्नता आवश्यक है। दोनों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याएं हल होनी चाहिएं। आत्मा को भी शुद्ध संकल्पों का ही पोषणयुक्त भोजन मिले—यह आवश्यक है ताकि अशुद्ध संकल्पों के भोजन से उत्पन्न ईर्ष्या, क्रोध आदि की भावनाएं समाप्त हों तथा शुद्ध संकल्पों की खुशी-खुमारी की झलक चेहरे पर दिखाई दे। बाह्य, अशुद्ध, तमोप्रधान

वातावरण से बचने के लिए आत्मा को योग-ध्यान रूपी कवच (वस्त्र) की भी नितांत आवश्यकता है। योग अर्थात् ईश्वरीय याद का कवच ही काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के प्रहारों से आत्मा की रक्षा करता है। तीसरी आवश्यकता मकान की है। आत्मा के घर 'परमधाम' की स्मृति भी आवश्यक है ताकि शिक्षक और विद्यार्थी अपने को सृष्टि रूपी नाटक का एक अभिनेता समझ अपना अभिनय कुशलता, स्वस्थता एवं निर्लिप्तता से कर सके। उसे पता चले मैं कौन, कहाँ से तथा क्यों आया हूँ?

सम्पन्नता का चौथा आधार है ऊँची शिक्षा। प्रमाणपत्रों की शिक्षा के साथ-साथ चरित्र निर्माण का ज्ञान तथा नैतिक शिक्षा की भी उतनी ही आवश्यकता है जिससे जीवन में दिव्यता का उदय हो। इस प्रकार शारीरिक सम्पन्नता के साथ जो व्यक्ति आत्मा से भी सम्पन्न है, वही सच्चे अर्थों में संपन्न है।

तीसरी बात, आध्यात्म अभिमुख शिक्षार्थी किसी को जन्म वा कर्म से दलित अथवा पिछड़ा हुआ नहीं मान सकता। दलित, पिछड़े तो वे हैं जो शराब, जुआ, चोरी, धूम्रपान, तमाखू आदि व्यसनों के दास बन अपने तन, मन, धन, समय, शक्ति का अपव्यय करते हैं और अपने ही घर में दुःख और अशांति फैलाते रहते हैं। इसके अतिरिक्त लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ तथा अन्याय द्वारा अशांति फैलाकर समाज एवं राष्ट्र से द्रोह करने वाले पिछड़े हैं, दलित हैं, दरिद्र हैं तथा शूद्र हैं।

चौथी बात, शिक्षा काल में मित्रों का वास्तविक परिचय भी अत्यावश्यक है। वास्तव में उच्च मानवीय गुण ही हमारे मित्र हैं जो प्रत्येक कार्य में शांति, सफलता और समृद्धि को आमन्त्रित करते हैं। प्रेम, शांति, पवित्रता, धैर्य, सहनशीलता, निःस्वार्थ भाव, सहयोग, निष्ठा, उत्साह आदि मित्रों की सहज कृपा प्रत्येक व्यक्ति पा सकता है यदि वह अपने को शरीर न समझ आत्मा समझे और सदैव इसी स्मृति में रहे कि मैं आत्मा शांतस्वरूप, प्रेम, आनंद, पवित्रता, शक्तिरूप हूँ। इस सृष्टि मंच पर मैं अपना अभिनय करने आई हूँ,मुझे सभी से प्रेम और आदर से व्यवहार करना है तथा मुझे जो कार्य सौंपा गया है इसे निष्ठा एवं निर्लिप्त भाव से पूर्ण करना है।

पांचवीं बात, परमात्म-स्मृति, योग वा एकाग्रता की अनुभूति करना है। योग द्वारा प्राप्त एकाग्रता की शक्ति से विद्यार्थी अपना विद्यार्थी-काल उज्ज्वल बना सकता है। परमपिता परमात्मा पिताओं का पिता है, देवों का देव और सर्वोपरि है। वह समस्त जागतिक विधान का एकमात्र नियंता है, जो अकर्त्ता, अभोक्ता, परमधाम निवासी ज्योतिबिन्दु स्वरूप है। ऐसे परमपिता परमात्मा की स्नेहयुक्त याद अथवा स्मृति ही योग है। आत्मा का परमात्मा से संबंध जोड़ना, मिलन मनाना ही राजयोग है, जो कर्मों में श्रेष्ठता लाकर श्रेष्ठ देवोपम जीवन का अधिकारी बनाता है। शिक्षा क्षेत्र में प्रत्येक शिक्षक तथा विद्यार्थी के लिए भी यह परम इष्ट है।

चित्र भी अभिव्यक्ति देता है। आज के विद्यार्थी के सामने कोई चित्र नहीं, अतः चरित्र नहीं। आज जीवंत-चित्र अध्यापकों को बनना है। धर्म, आध्यात्म के सही राज़ों को प्रथम हमें पचाना है, देवोपम आदर्शों का व्यवहारिक रूप हमें धारण कर धारणमूर्त बनना है। मात्र वाचा का प्रभाव नहीं, प्रभाव हमारे कर्मों का, विचारों का, आचरण का होता है। भविष्य की देवोपम सृष्टि के निर्माण के लिए नींव का कार्य शिक्षक-अध्यापक-शिक्षाविद् ही कर सकते हैं,परमात्मा भी प्रथम परम शिक्षक बन हमें स्नेह-सौजन्य सुखमूर्त शिक्षक बनाते हैं। शिक्षक का कार्य परमात्मा का कार्य है—इस गौरव और स्वाभिमान से हम ही इस विश्व को बदल सकते हैं सवं नया विश्व, सुखमय संसार बना सकते हैं।

पणजी (गोवा) सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में 'पिता श्री' के जीवन पर प्रकाश डालते ब्र०कु० पाटील, सचिव, लायन्स क्लब।

आओ, जीवन रूपी पौधे को दिव्यगुणों रूपी फूलों से सम्पन्न बनायें

—ब्र०कु० उर्मिला, कृष्णा नगर, दिल्ली

किसी भी व्यक्ति के जीवन में कुछ ही मात्रा में दिव्य गुणों की धारणा होती है तो लोग कहते हैं कि यह तो जैसे 'देवता' है। हरेक मनुष्य चाहता भी यही है कि उसके जीवन में दिव्यगुणों की धारणा हो एवं दिव्यता का पूर्ण उत्कर्ष हो। तो आइए, ऐसा दिव्यगुण सम्पन्न देवता बनने के लिये दिव्यगुणों की धारणा पर विचार करें

जैसे खूशबूदार फूल वातावरण को खूशबूदार बनाने के साथ-साथ सर्व को अपनी ओर आकर्षित करता है, प्यारा लगता है। ऐसे ही मानव-जीवन में दिव्यगुणों की खूशबू आने से वह सर्व को सुख देने लगता है। दिव्यगुणों से सम्पन्न जीवन उस हरे-भरे फूलों से लदे पौधे के समान है जो सबको अपनी ओर आकर्षित करता है।

परन्तु इस दिव्यगुणों से सम्पन्न जीवन रूपी पौधे का बीज है आत्मिक स्थिति। आत्मिक स्थिति पर आधारित जीवन चमकदार हीरे के समान है जबकि देह-अभिमान रूपी मिट्टी लग जाने से सारी चमक ही लोप हो जाती है।

अन्तर्मुखता सर्व दिव्यगुणों की जननी है। अन्तर्मुखी व्यक्ति का स्वभाव शान्त, सरल व शीतल बन जाता है। अन्तर्मुखता के गुण को धारण करने से व्यक्ति के चेहरे पर रूहानियत, बोल में मधुरता, व्यवहार में श्रेष्ठता तथा कर्मों में महानता आ जाती है।

इसी प्रकार सन्तुष्टता भी एक उच्च कोटि का दिव्यगुण है। परन्तु देह-अभिमान के कारण यह सन्तुष्टता रूपी गुण रायल रूप के अवगुण में परिवर्तन हो जाता है। जैसे कि सूर्यवंशी पद पाने के लिये पुरुषार्थ करने की हिम्मत ना होने पर स्वयं को चन्द्रवंशी बनने में ही सन्तुष्ट कर लेना। हरेक गुण का सम्बन्ध आत्मिक स्थिति से तथा अवगुण का सम्बन्ध देह-अभिमान है

जीवन रूपी पौधे को दिव्यगुणों रूपी फूलों से सम्पन्न बनाने के लिये इन चार बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—(१) आत्मिक स्वरूप की धरनी, (२) ईश्वरीय ज्ञान रूपी जल, (३) ईश्वरीय याद व सेवा रूपी खाद तथा (४) ईश्वरीय संग अर्थात् सत्संग रूपी देखभाल। तो आओ, उपरोक्त बातों पर ध्यान देकर हम जीवन रूपी पौधे को दिव्यगुणों के फूलों से सम्पन्न बनायें जिससे ही 'दिव्यता' रूपी फल प्राप्त होगा। ■

आओ, खेलें होली शिव-साजन के संग!

डाल हाथ में हाथ आओ ऐ हमजोली,
आओ अलौकिक ढंग से इस बार मनाएँ होली!
कलियुगी रीति-रिवाजों की, हमें नहीं दरकार
शिव के रंग में रंग के खेलो होली का त्यौहार
होली का त्यौहार, ज्ञान-गुलाल उड़ाओ
प्रेम-प्यार के रंग में सबको रंगते जाओ
ज्ञान-रंग से रंगे बिना, न रहे एक भी चोली
आओ अलौकिक ढंग से इस बार मनाएँ होली

होली के दिन सभी जलाते काँटे झाड़-झंकार
किन्तु अन्तर्मन में रहती दुर्गुणों की भरमार
दुर्गुणों की भरमार कभी न इन्हें जलाया
होलिका-दहन का रहस्य उनको समझ न आया
ये बातें बड़े राज की, नहीं कोई हँसी-ठिठोली
आओ अलौकिक ढंग से इस बार मनाएँ होली

आओ आज होली के दिन मन का मैल मिटाएँ
परचिन्तन परदर्शन की होली आज जलाएँ
अवगुण देखें कभी न किसके सबको गले लगाएँ
भूल पुरानी बातें सारी नव संसार बसाएँ
जो बीती सो बीती कर दें जो होली सो हो ली
आओ अलौकिक ढंग से इस बार मनाएँ होली

उल्लास भरा हो जीवन में और मन में नयी उमंग
आओ इस बारी होली खेलें शिव-साजन के संग
शिव-साजन के संग, रंग जो कभी न छूटे
हो पक्की ऐसी डोर प्रेम जो कभी नहीं टूटे
स्मृति-तिलक लगाके बाँधें, दृढ़-संकल्प की मौली
आओ अलौकिक ढंग से इस बार मनाएँ होली

ब्र०कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया Regd No. 10563/65-D, (E)—70